चन्दामामा
फरवरी १९७७
Rs 1.25

"आपने कहा था कि ये बड़ी आसानी से सांफ किये जा सकते हैं!"
सोमानी-पिल्किंगटन्स् वॉल टाइल्स आसानी से साफ किये जा सकते हैं तथा सम्पूर्ण स्वास्थ्य-सम्मत होते हैं। तरह तरह के डिजाइनो, फीके न पड़ने वाले रंगों—जगमगाते सफेद समेत में मिलते हैं। शानदार ऐसे कि देख कर जी खुश हो जाय। हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा निर्मित सैनिटरीवेयर तथा सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड द्वारा बने सोमा मेट्ल फिटिंग्स का बड़ी खूबसूरती के साथ सोमानी पिल्किंगटन्स् वॉल टाइल्स से मेल बैठ जाता है।
खूबसूरत स्नानगृह का प्रतीक
सोमानी-पिल्किंगटन्स् लिमिटेड
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर की एक सहायक संस्था
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड
२, रेड क्रास प्लेस, कलकत्ता-७००००१
naa, SPL-7523

राम और श्याम ने कराया-
शकुंतला का राजा से मिलन

देवी! तुम हो सुंदर,
इंकार मैं करता नहीं...
पर तुम्हें पहले कभी देखा नहीं.

अंगूठी तुम्हारी नहीं मिल रही...
कहा खो गई —
याद आता नहीं.

ये रही अंगूठी जो चाहिए तुम्हें,
मछली के पेट में मिली है हमें.

मांगो,
बच्चो मांगो
अपना इनाम
पॉपिन्स
दो हमारा,
बन जाएगा काम.

हुआ सवेरा, जागे राम और श्याम
अमर चित्र कथा और पॉपिन्स
थीं बिखरी तमाम.

सुनो साथियो,
कुछ रैपर तुम जमा करो,
मनचाहे कॉमिक्स हासिल करो.



पारले
पॉपिन्स



PARLE
POPPINS
MIXED FRUITY SWEETS

# अपने बच्चे को जीवन में आगे बढ़ने का सुअवसर दिलाइये

Sista's-UTI-735/76-D-Hin

# चन्दामामा/बलसारा ओडोमॉस रंग-भरो प्रतियोगिता

**जीतने के लिए ५० पुरस्कार!**
दो पहला पुरस्कार : प्रति २५ रुपये
तीन दूसरा पुरस्कार : प्रति १० रुपये
बीस तीसरा पुरस्कार : प्रति ५ रुपये
इसके अलावा २५ प्रतिभा प्रमाणपत्र।

CUT ALONG DOTTED LINE

ऊपर के चित्र में रंग भरो और प्रवेश के लिए इस पते पर भेजो :
CHANDAMAMA/BALSARA'S-ODOMOS COLOURING CONTEST, POST BOX NO. 6121, BOMBAY 400 005.
हर प्रवेश के साथ बलसारा के ओडोमॉस के डब्बे का ऊपरी 'फ्लैप' भेजना जरूरी है। इसमें केवल १६ वर्ष तक की आयु के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। घोषित परिणाम अंतिम होंगे और इस विषय में किसी भी पत्र व्यवहार पर ध्यान नहीं दिया जायेगा।

Name : ______________________ Age : __________

Address : ______________________________

______________________________

अपना प्रवेश ३१ मार्च १९७७ के पहले भेजो।
ऊपर के विवरण अंग्रेजी में भरो।
इस चित्र को अपनी पसंद के किसी भी रंग में रंग सकते हो।

इस 'फ्लैप' को भेजो

odomos
MOSQUITO REPELLENT
ओडोमॉस
मच्छरों का दुश्मन

**बलसारा का ओडोमॉस—मच्छरों का दुश्मन**

CHAITRA-BLS-141 HIN

आनन्द !... ऐसा मत करो !

तुम्हारा बेटा है वह... तुम्हारा प्यारा बेटा है... तुम्हारा बड़ा लड़का है वह !

नहीं, नहीं ! तुम्हारे अपने बेटे के साथ तुम ऐसा नहीं कर सकते। क्या वह तुम्हारा खून नहीं है ?

होश में आओ ! तुम उसे नहीं मार सकते। वह तुम्हारी लाडली बेटी है।

तुम शहर के सब से धनी और इज़्ज़तदार आदमी हो... कौनसी परेशानी तुम्हे खाये जा रही है, आनन्द ?

इन्सान के दिल में उठनेवाले विचारों के चढ़ाव-उतार का चित्रण यानी

**बी. नागी रेड्डी** की फ़िल्म

# यही है ज़िंदगी

इस्टमनकलर, फ़िल्मसेन्टर द्वारा

मनुष्य के आंतरिक भावों का सुस्पष्ट निरूपण—
अहम् और परितोष के बीच संघर्ष की कहानी।

दिग्दर्शक : के. एस. सेथूमाधवन  संवाद : इन्द्र राज आनन्द
गीत : आनन्द बक्षी  संगीत : राजेश रोशन

विजया प्रॉडक्शन्स की अनूठी फ़िल्म

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

नवंबर '७६ के 'चन्दामामा' के अंक की कथा-शीर्षक-प्रतियोगिता ने पाठकों को विशेष रूप से आकृष्ट किया है। चन्दामामा की प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले व्यक्तियों को केवल कार्ड का ही उपयोग करना होगा। लिफाफे में प्राप्त होने पर उन पर विचार नहीं किया ज़ाएगा। कथा-शीर्षक-प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को पुन: कहानी लिखने की जरूरत नहीं है। अपने नाम, पता व कथा का उत्तम शीर्षक लिखना पर्याप्त है। कुछ व्यक्तियों ने चार-पांच शीर्षक लिखे हैं, यह गलत है। कोई एक उत्तम शीषक चुनकर भेजना चाहिए।

वर्ष : २९ फ़रवरी १९७७ अंक : ६

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

अनभिज्ञाय शास्त्रार्थान्
पुरुषाः पशुबुद्धयः
प्रागल्म्या द्वक्तु मिच्छति
मंत्रे स्वभ्यंतरीकृताः ॥ १ ॥

[ शास्त्रार्थ से अनभिज्ञ मूर्ख व्यक्ति ही मंत्रणा की सभाओं में दखल देकर अकसर डींग मारते हैं । ]

अशास्त्र विदुषाम् तेषाम्
न कार्यं महितम् वचः
अर्थशास्त्रा नभिज्ञानाम्
विपुलाम् स्त्रिय मिच्छताम् ॥ २ ॥

[ ऐसे शास्त्र-विमूढों के वचन हानिकारक होते हैं । दूसरों का हित चाहनेवालों को ऐसी बातों पर ध्यान न देना है । ]

अहितम् च हिताकारम्
दाष्ट्र्या ज्जल्पंति येनराः
अपेक्ष्य मंत्रबाह्या स्ते
कर्तव्याः कृत्य दूषणाः ॥ ३ ॥

[ जो लोग अपने प्रागल्भों द्वारा अहित को हित बताते हैं, ऐसे लोगों की पहले ही परीक्षा करके उन्हें मंत्रणा से बहिष्कार करना चाहिए । ]

दुष्ट मंत्री

# मित्र-संप्राप्ति

[ ४३ ]

कौआ, कछुआ तथा चूहा-ये तीनों मित्र सरोवर के तट पर आराम से अपने दिन बिताने लगे।

एक दिन जब वे तीनों मित्र गोष्ठी में निमग्न थे तब वहाँ पर चित्रांग नामक हिरण इस प्रकार दौड़ते आकर सरोवर में कूद पड़ा, मानो शिकारी उसका पीछा कर रहे हो! कछुआ भी यह सोचकर सरोवर में कूद पड़ा कि कहीं हिरण के पीछे शिकारी चले आ रहे हो! चूहा बिल में घुस गया। कौआ निकट के पेड़ पर जा बैठा।

मगर बड़ी देर तक शिकारियों के आने का पता कौए को न लगा। हिरण ताबड़-तोड़ पानी पीने लगा, इसे देख कौए ने अपने मित्र कछुए और चूहे को बुलाकर कहा–"शिकारियों ने हिरण का पीछा नहीं किया। हिरण अधिक प्यास के मारे यहाँ पर दौड़ा आया है। हम लोग नाहक़ ही डर गये हैं।"

इस पर मंथरक (कछुआ) ने समझाया–"दोस्त! तुम भूल कर रहे हो! हिरण का चेहरा देखते ही लगता है कि शिकारियों ने उसका पीछा किया है। वह तेज़ी के साथ दौड़ते हुए भी बार-बार मुड़कर पीछे देखता रहा है। उसका कलेजा तेजी के साथ धड़क रहा है! जान के डर से भागनेवाले लोगों में भी ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं। अगर उसे केवल प्यास ही लगी होती तो इतनी तेजी के साथ उसे दौड़ते आने की ज़रूरत न थी।"

इसके उत्तर में चित्रांग ने यों कहा–"मंथरक! तुमने मेरे भय का कारण सही ढंग से भांप लिया है। कई शिकारियों ने मेरा पीछा किया, उनके बाण रत्ती भर की

अंतिम पृष्ठ का चित्र

दूरी में चूक गये। उन दुष्टों ने मेरे सारे दल को मार डाला है। मैं तुम लोगों की शरण चाहता हूँ। मुझे यहाँ पर आश्रय देकर अपने मित्र बना लो और उन दुष्ट शिकारियों से मेरी रक्षा करो।"

"हे हिरण! तुम यहीं रहकर हमारे आहार में हिस्सा बांटकर खाते रहो, इस में हमें कोई आपत्ति नहीं है। अगर दुश्मन से बचना है तो दौड़ने की और भुजाओं की भी ताक़त होनी चाहिए। इसलिए शिकारियों के आने के पहले हम लोग घने जंगल में घुस जायेंगे।" कछुए ने कहा।

पेड़ पर से निगरानी करनेवाले कौए ने समझाया–"शिकारी अपने डेरों में चले जा रहे हैं। इस वक़्त हमें डरने की कोई बात नहीं है। हम इस कड़ी धूप म इस विशाल वृक्ष की छाया में आराम कर सकते हैं।" इसके बाद चित्रांग (हिरण) ने कौए, कछुए तथा चूहे के साथ मैत्री करने की इच्छा प्रकट की।

इसके जवाब में मंथरक ने समझाया–"हम अत्यंत अल्प प्राणी हैं। हमारी मैत्री से तुम्हारा कौन उपकार हो सकता है? रक्षा चाहनेवालों को चाहिए कि बलवान व्यक्तियों को अपना मित्र बना ले!"

"मित्र चाहे अल्प व्यक्ति ही क्यों न हो, बड़ों की भी सहायता कर सकते हैं। हाथी को छुड़ानेवाले चूहे की कहानी इसका एक अच्छा उदाहरण है।" हिरण ने उत्तर दिया।

मंधरक ने पूछा–"वह कैसी कहानी है?" चित्रांग ने वह कहानी यों सुनाई:

"हाथी को छुड़ानेवाले चूहे"

एक जंगल में एक भग्न मंदिर था। उसके सामने एक बहुत बड़ा तड़ाग था। मंदिर के खण्डहरों में लाखों चूहे अपने बिल बनाकर आराम से रहा करते थे।

एक बार देश में पानी का अकाल पड़ा। इस पर हाथियों का राजा अपने दल के साथ पानी की खोज करते भग्न मंदिर के सामने स्थित तड़ाग के निकट आया। हाथी मंदिर के खण्डहरों के बीच चलने लगे, इस कारण कई चूहे हाथियों के पैरों के नीचे दब कर मर गये। चूहों ने एक सभा बुलाई, अपनी विपदा की चर्चा की, अंत में हाथियों के राजा के पास इस प्रकार संदेशा भेजा–"आप हमारे प्रति भूतदया दिखाइए! हम भले ही क्षुद्र प्राणी क्यों न हो, हमारे द्वारा आप का कभी कोई प्रयोजन हो सकता है।"

हाथियों का राजा ये बातें सुन हंस पड़ा, फिर भी उसने चूहों की इच्छा को मान लिया। उस वक्त से हाथी खण्डहरों के बीच से न चलकर मंदिर की परिक्रमा करके तड़ाग में आने-जाने लगे।

वहाँ के समीप में स्थित एक राजा ने हाथियों का पता लगाया और पानी में ही हाथियों को फंसाने का प्रबंध किया। पानी में जो जाल बिछा था, उसे न देखने की वजह से कई हाथी उस जाल में फंस गये। हाथियों के राजा ने चूहों के वादे की याद की और जाल में न फंसनेवाली एक हाथिन को चूहों के पास मदद के लिए भेजा। चूहों ने आकर हाथियों की बुरी हालत देखी और अपने तेज दांतों से हाथियों के बंधनों को काट डाला और मुक्त किया।

इस पर हाथियों के राजा ने अपने अनुचरों से कहा–"तुम लोग दोस्ती करो! दोस्ती करो दुर्बलों से! दुर्बल मित्र भी विपदा में सहायता कर सकते हैं, इस बात को चूहों ने प्रत्यक्ष साबित किया है।"

# १८१. अति प्राचीन वृक्ष

आरिजोना राज्य में अनेक करोड़ों वर्ष पूर्व घने जंगल थे। उनमें कई महान वृक्ष थे। उन वृक्षों ने कालांतर में शिलीभूत हो फासिल का रूप धारण किया। गौतम ने अहल्या को पाषाण बन जाने का शाप दिया, मगर प्राणवान प्रत्येक पदार्थ को समय ही शिला के रूप में बदल सकता है। इस प्रकार पाषण बना हुआ महावृक्ष इस चित्र में दिखाई देता है।

# माया सरोवर

[ १२ ]
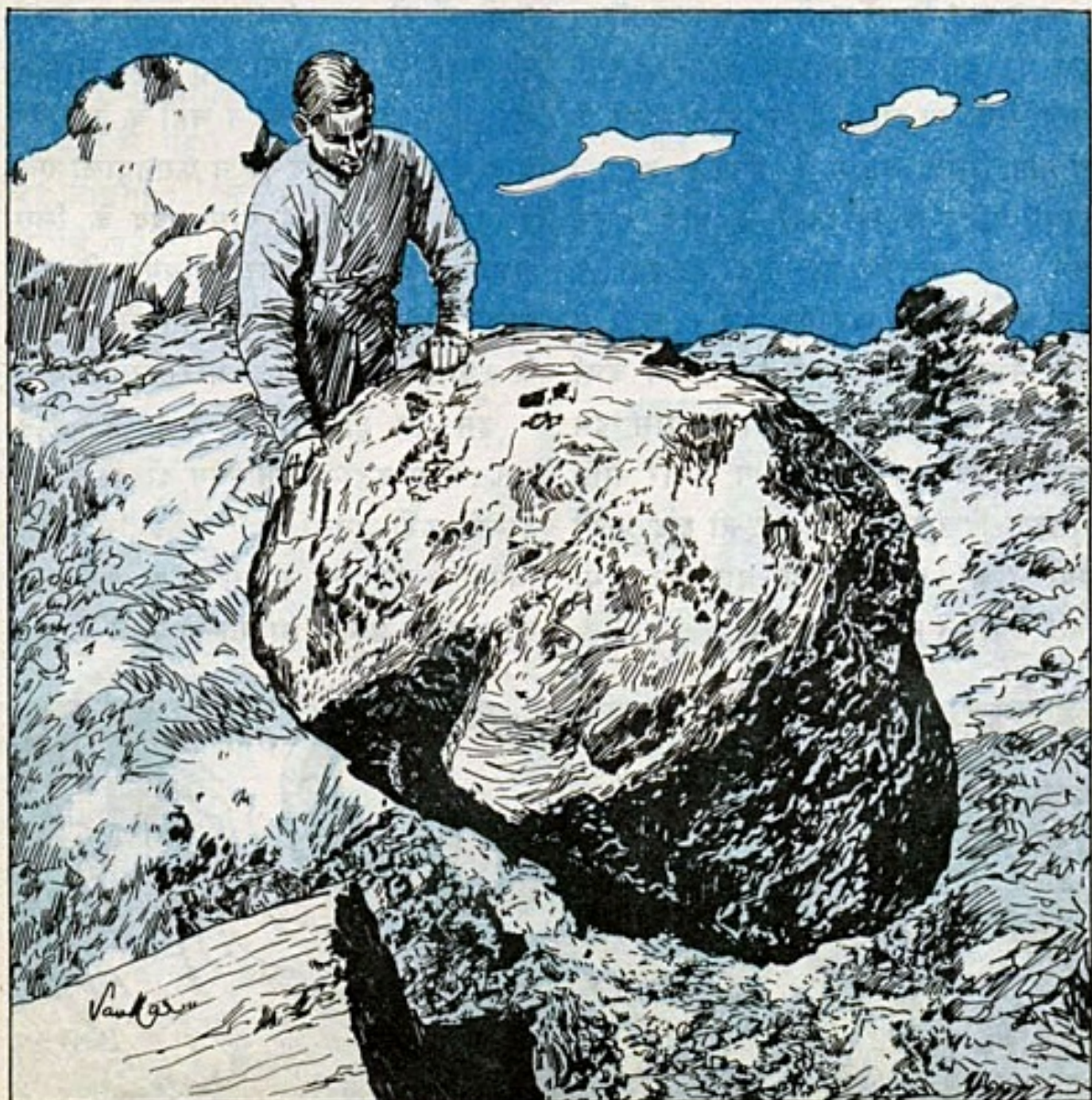
[ पहाड़ी तालाब में डूबनेवाले जलग्रह को मकरकेतु पहाड़ी पर के सरोवर में ले गया, वहाँ पर जयशील तथा सिद्ध साधक को छोड़ जलग्रह के साथ वह फिर पानी में डूब गया। जयशील और सिद्ध साधक जलप्रपात में फँस गये और अंत में धारा के साथ नीचे गिरे। बेहोश सिद्ध साधक की ओर एक बाघ बढ़ रहा था, तब जयशील वहाँ पहुँचा। बाद...]

सिद्ध साधक की ओर बाघ के बढ़ते देख जयशील उसकी ओर दौड़ा। बाघ अपने अगले पंजों से सिद्ध साधक के सर पर प्रहार करने ही जा रहा था कि उसके ध्यान को हटाने के लिए जयशील ने ललकारकर उस पर एक पत्थर का प्रहार किया।

जयशील उस समय बाघ से बीस-तीस फुट की दूरी पर ही था। ललकार के साथ पत्थर की चोट खाकर बाघ ने पीछे मुड़कर देखा। मौक़ा पाकर जयशील ने तेजी के साथ आगे बढ़कर बाघ की पिछली टांगों को पकड़ा और उसे जोर से खींचा। बाघ ने अगली टांगों के बल पर खड़े हो जाने की बड़ी कोशिश की, पर पैर जमा न पाने की लाचारी में क्रोध के मारे गरज पड़ा। उसके गर्जन से आस-पास का वायुमण्डल देर तक प्रतिध्वनित

होता रहा। बेहोशी में पड़ा सिद्ध साधक बाघ का गर्जन सुनकर चौंक पड़ा और उसने धीरे से अपनी आँखें खोल दीं। सामने बाघ को देख अपनी पुरानी आदत के अनुसार "जय महाकाल की!" चिल्लाकर शूल उठाने को हुआ, पर शूल को हाथ में न पाकर भय के मारे पीछे हटते जाकर पानी में गिर पड़ा।

इस बीच जयशील ने भांप लिया कि बाघ की पिछली दोनों टांगें टूट गई हैं। उसकी दोनों टांगों को पकड़कर जयशील ने दूर खींच लिया, तब बोला-"सिद्ध साधक, तुम्हें केवल बाघ दिखाई दे रहा है, बाघ के पीछे स्थित मैं दिखाई नहीं दे रहा हूँ न?"

जयशील की ये बातें सुन सिद्ध साधक बड़ी प्रसन्नता के साथ पानी में ही उठ खड़ा हुआ और बोला-"जयशील, क्या तुम यहीं हो? तुम्हें जलप्रपात से नीचे गिरते हुए मैंने देख लिया था, इसके बाद मैं देख न पाया कि तुम्हारा क्या हाल हो गया है? बाघ का गर्जन सुनने पर मेरे होश लौट आये।"

"आखिर दोनों बच रहे। हम दोनों भगवान के शुक्र गुजार हैं।" इन शब्दों के साथ जयशील ने मुड़कर देखा, बाघ जमीन पर लोटते धीरे से घुर्रा रहा था, इस पर वह पुनः बोला-"बेचारा यह बाघ जलप्रपात की धारा में बहते चट्टानों पर गिरकर अपनी दो टांगें खो बैठा है। अब बेचारा यह अपने आहार का संपादन न कर सकेगा। भूख के मारे दुर्बल हो मर जाने की अपेक्षा इसी वक़्त इसका मर जाना कहीं उत्तम है।" यों कहते तलवार उठाकर उसका सिर काटने आगे बढ़ा।

इस बीच सिद्ध साधक अपना शूल ढूंढने लगा। वह पानी के किनारे थोड़ी दूर पर गिरा हुआ था। उसका उत्साह उमड़ पड़ा। शूल लिये वह जयशील की ओर चल पड़ा। जयशील सर झुकाये बाघ की ओर देखते हुए बोला-"सिद्ध साधक,

वास्तव में इस बाघ ने हमारी कोई हानि नहीं की है। इसे मारने के लिए मेरे हाथ जवाब दे रहे हैं। मैं समझता हूँ कि इसे प्राणों के साथ छोड़ देना उचित होगा।"

सिद्ध साधक ने जयशील के हाथ से तलवार खींचकर कहा-"प्राणों के साथ यातनाएँ भोगनेवाले इस बाघ को पीड़ा से हम मुक्त कर रहे हैं। ऐसा करना हमारे लिए पुण्य कार्य ही होगा न?" इन शब्दों के साथ एक ही वार से बाघ का सर काट डाला।

जयशील ने चारों तरफ़ एक बार दृष्टि डाली, तब कहा-"सिद्ध साधक! हमारा आगे का कार्यक्रम क्या होगा? राजा कनकाक्ष के बच्चों का अपहरण करनेवाले व्यक्ति के सेवक को हमने भागने दिया, उसे छोड़ना नही चाहिए था। हम मंत्री को क्या जवाब देंगे?"

"जयशील, यह कहना कठिन है कि हमने उसे छोड़ दिया या उसने हम से छुड़वा लिया। आखिर हम उस जलग्रह के साथ कब तक जीवित रह सकते हैं? इस वक़्त हमें उसके बारे में चर्चा करने से फ़ायदा ही क्या है? अब सवाल यह है कि हम किस प्रकार के प्रदेश में पहुँच गये हैं? और इस प्रदेश में कहीं मानवों का निवास है या नहीं? इसे पहले हमें जानना होगा!" सिद्ध साधक ने पूछा।

सिद्ध साधक की बातें पूरी न हो पाई थीं कि नदी के किनारेवाले घने वृक्षों के बीच से एक व्यक्ति की भयंकर पुकार और पहाड़ी भेड़ की चिल्लाहट सुनाई दी।

उस ध्वनि की दिशा में दृष्टि दौड़ाते हुए सिद्ध साधक ने कहा-"भाई जयशील! यह तो बताओ, पहाड़ी भेड़ ने मनुष्य को पकड़ लिया? या मनुष्य ने पहाड़ी भेड़ को? लगता है कि दोनों जान के डर से चिल्ला रहे हैं।"

"मित्रवर, लगता है कि उन दोनों को किसी ज़बर्दस्त खूँख्वार जानवर ने पकड़

लिया है । जल्दी दौड़ो!" इन शब्दों के साथ जयशील ध्वनि की दिशा में तेजी के साथ दौड़ पड़ा ।

जयशील तथा सिद्ध साधक थोड़ी ही दूर आगे बढ़ पाये थे कि उन्हें संभ्रम में डालनेवाला एक दृश्य दिखाई पड़ा । पानी के किनारे पर स्थित एक विशाल वृक्ष की डाल से एक भेड़ तथा एक नाटा आदमी लटक रहे थे, वृक्ष की शाखाओं में छोटे-छोटे पत्ते थे ।

"यह तो कोई विचित्र पेड़ मालूम होता है, शाखाओं पर कोई भी प्राणी नहीं है । भेड़ और नाटे आदमी को कौन ऊपर खींच रहा है? कोई पेड़ पर तो दिखाई नहीं देता?" जयशील ने कहा ।

"यह काम कोई अदृश्य रहनेवाला पिशाच कर रहा है । मैं अपने शूल से उसके कलेजे को भोक देता हूँ ।" यों कहते सिद्ध साधक शाखा के नीचे जाकर शूल उठाने को हुआ, तभी एक और शाखा ने झुककर झट से उसका कंधा पकड़ लिया ।

सिद्ध साधक को संदेह हुआ कि कोई जबर्दस्त प्राणी उसका कंधा पकड़कर खींचने जा रहा है, तभी वह उछलकर उस शाखा की परिधि से बाहर आया और बोला-"जयशील, लगता है, यह कोई राक्षसी वृक्ष है ।"

"मैं नहीं जानता कि यह राक्षसी वृक्ष है या पिशाच वृक्ष? लेकिन यह निश्चित है कि अपनी सीमा के अन्दर आनेवाले मनुष्यों तथा जानवरों को पकड़कर खानेवाला जरूर है ।" इन शब्दों के साथ जयशील ने उछलकर उस शाखा को काट डाला जो नाटे तथा भेड़ को पकड़े हुए थी । दूसरे ही क्षण शाखा से लटकनेवाले वे दोनों प्राणी नीचे बहनेवाले पानी में गिर पड़े ।

सिद्ध साधक तथा जयशील ने जल्दी जाकर नाटे को किनारे की ओर खींच लिया । भेड़े किनारे पर चढ़ आई और

अपनी देह के जल को झटका देकर उछाल दिया, तब चिल्ला उठी।

"जयशील, देखते हो न? यह साधारण भेड़ नहीं है। सवार करनेवाले घोड़ की भांति इसके भी जीन और लगाम हैं।" सिद्ध साधक ने कहा।

मौत के डर से नाटा पहले ही कांप रहा था, अब पानी में डूबने से उसकी कंप-कपी और ज्यादा हो गई थी। अपनी रक्षा करनेवाले जयशील तथा सिद्ध साधक की ओर आँखें मिचमिचाकर बोला– "महाशय, आप लोगों ने गढ़वाल की रानी के सेनापति मुझे मनुष्यभक्षी इस पेड़ से बचाया; इस उपलक्ष्य में हमारी रानी प्रसन्न होकर आप को अवश्य बढ़िया पुरस्कार देंगी।"

जयशील ने नाटे की ओर आश्चर्यभरी दृष्टि दौड़ाकर कहा–"इस प्रदेश पर एक रानी शासन कर रही हैं और उस रानी के यहाँ सैनिक और तुम जैसे सेनापति भी हैं? अरे यह कैसे आश्चर्य की बात है?"

"जयशील, सबसे विचित्र बात तो प्राणियों का भक्षण करनेवाला यह पेड़ है! ऐसे वृक्षों के बारे में मैंने कई बार सुना है, पर मैं पहली बार ऐसे वृक्ष को देख रहा हूँ।" ये शब्द कहते सिद्ध साधक पेड़ के पीछे चला गया, जोर से तालियाँ बजाते

हुए बोला–"जयशील! इस राक्षसी वृक्ष की भूख साधारण भूख नहीं है। कुंभकर्ण की जैसी भूख है। आओ, देखो तो सही कितने जानवर और मनुष्यों के कंकाल यहाँ पर पड़े हुए हैं!"

जयशील ने सिद्ध साधक के निकट जाकर पेड़ के नीचे झाड़ियों पर झूलनेवाले अनेक कंकालों को देखा। चलते-चलते वह ज्यों ही पेड़ की शाखाओं के नीचे आया, त्यों ही नीचे की एक शाखा 'जुयें' आवाज़ के साथ उसे पकड़ने को हुई। जयशील झट से दूर हट गया, और दूर जाकर विस्मयपूर्वक उसकी ओर ताकने लगा।

नाटा सेनापति अपने वाहन पहाड़ी भेड़ की लगाम पकड़कर जयशील और सिद्ध साधक के निकट आया और बोला–"महाशय, आप लोगों ने खतरे से मेरी रक्षा करके गढ़वाल जाति का महान उपकार किया है। चलिए, हमारी रानी के यहाँ चले चलेंगे।"

ये बातें सुन सिद्ध साधक खीझकर बोला–"चल, हट! प्राण लेनेवाले पेड़ का पता जानते हुए अपने प्राण न बचा सकनेवाला तू भी एक सेनापति है? तेरी रानी हमें कैसी पुरस्कार देगी? शायद थोड़े कंद-मूल और सेर भर बांस का चावल देगी; बस, यही है न? अब तू अपने रास्ते चल, हम अपने रास्ते चले जायेंगे।"

यह सुनकर नाटा सेनापति बुदबुदाया, वह सोच ही रहा था कि क्या किया जाय, तभी पेड़ों की आड़ में से भयंकर कोलाहल सुनाई पड़ा। जयशील तथा सिद्ध साधक ने उस कोलाहल की दिशा में नजर दौड़ाई। तभी उन लोगों ने देखा कि दो पहाड़ी भेड़ों से जुते रथ पर सवार हो एक नारी उनकी ओर बढ़ती चली आ रही थी। उसके बदन पर हिरण के चमड़े के वस्त्र पड़े हुए थे, बक तथा मोर के पंखों से सिया हुआ किरीट वह धारण किये हुए थी। उस रथ के पीछे तथा बगल में भी भेड़ों पर सवार हुए अनेक नाटे सैनिक थे, जिनके हाथों में भाले चमक रहे थे।

उस दल को देखते ही नाटा सेनापति आगे बढ़ा और विनयपूर्ण स्वर में बोला–"महारानीजी! इन दोनों वीरों ने प्राणी भक्षक वृक्ष से मेरी रक्षा की है।" उसने झुककर अपनी रानी को प्रणाम किया।

नाटे ने रथ को जयशील तथा सिद्ध साधक के सामने जाकर रोका और पूछा–"हे महाकाय वीरो, रात को सपने में दर्शन देकर तुम्हीं लोगों ने हमारी गढ़वाल जाति के शत्रुओं का वध करके हमें शाश्वत रूप से सुरक्षा दिलाने का वचन दिया था न?"

सिद्ध साधक ने रानी की बातें सुन धीमी आवाज़ में जयशील से कहा–"दोस्त! यह रानी कोई चतुर मालूम होती है।"

"हाँ हाँ! बड़ी कुशल मालूम होती है। बेचारे इन नाटों को किन लोगों के द्वारा खतरा होनेवाला है? पता लगाकर हम इन लोगों की मदद करेंगे।" जयशील ने उत्तर दिया।

सिद्ध साधक ने अपने चेहरे पर अनिच्छा व्यक्त करते हुए कहा–"जयशील! हम दोनों एक महान कार्य के हेतु निकल पड़े हैं। उस बात को भूलकर हम इन कमबख्त नाटे लोगों के काम में फँस जायेंगे तो हम अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।"

"सिद्ध साधक! राजा कनकाक्ष के बच्चों के प्राण जैसे ही हैं इनके भी प्राण! न मालूम इन्हें किन लोगों के द्वारा खतरा पैदा होनेवाला है! इसका पता लगाकर यथाशक्ति इनकी मदद करना हमारा कर्तव्य होगा।" जयशील ने पुनः जोर दिया।

जयशील की बात पूरी होने के पूर्व ही निकट के पहाड़ के ऊपर से एक भयंकर ध्वनि सुनाई दी। जयशील के साथ सबने उस दिशा की ओर अपनी दृष्टि डाली। दस-बारह फुट की एक विकृत आकृति पहाड़ी पर खड़ी थी। उसके दोनों हाथों में एक विशाल चट्टान थी। उसकी कमर में बंधी एक मजबूत लोहे की जंजीर को एक हाथ में थामे, दूसरे हाथ में एक तलवार

लिए एक मनुष्य उस भयंकर आकृति से थोड़ी दूर पर खड़ा हुआ था ।

उस विकृत आकृति को देखते ही नाटी रानी के साथ उसके सभी अनुचर थर थर कांपने लगे । इस बीच विकृत आकृति के बाजू में खड़े हुए व्यक्ति ने तलवार की नोक से धीरे से चुभोया । विकृत आकृति चट्टान को वैसे ही थामे गरजते हुए इधर-उधर उछलने लगी ।

जयशील ने सिद्ध साधक से कहा– "सिद्ध साधक! उस भयंकर जानवर को पालतू बनाकर खिलानेवाला व्यक्ति नाटा नहीं, हम जैसे एक व्यक्ति है । यह किस जाति का जानवर होगा?" फिर रानी की ओर मुड़कर पूछा–"तुमने अपने दुश्मनों की बात बताई, क्या वह भयंकर जानवर और उसके साथवाला व्यक्ति ही तुम्हारे शत्रु हैं?"

यह सवाल सुनकर रानी थोड़ा आश्वस्त हो गई, रथ से उतरकर सिद्ध साधक तथा जयशील के निकट पहुँची, तब इतमीनान से बोली–"महान वीरो, हमारे असली शत्रु तो पहाड़ के उस पारवाले हम जैसे नाटी जाति के लोग ही हैं । मगर वे लोग अपने को यक्ष जाति की संतान बताते हुए घमण्ड में आकर हमारा सर्वनाश करना चाहते हैं ।"

"ऐसे भयंकर प्राणी को पालतू बनानेवाले वे लोग तुम पर कभी के अधिकार कर सकते थे न?" सिद्ध साधक ने पूछा ।

"महान योद्धाओ! वह भयंकर जानवर नर वानर है! उसके द्वारा हम पर चट्टानें गिरानेवाला व्यक्ति आप के जैसे एक मानव है! वे दोनों इधर दस-बारह दिन पूर्व ही हमारे दुश्मन के दल में आ मिले हैं ।" नाटी रानी ने समझाया ।

रानी की बात समाप्त होने के पहले नर वानर भयंकर रूप से गर्जन कर उठा । अपने हाथों में स्थित भारी चट्टान को नाटी जाति के लोगों पर फेंका ।

(और है)
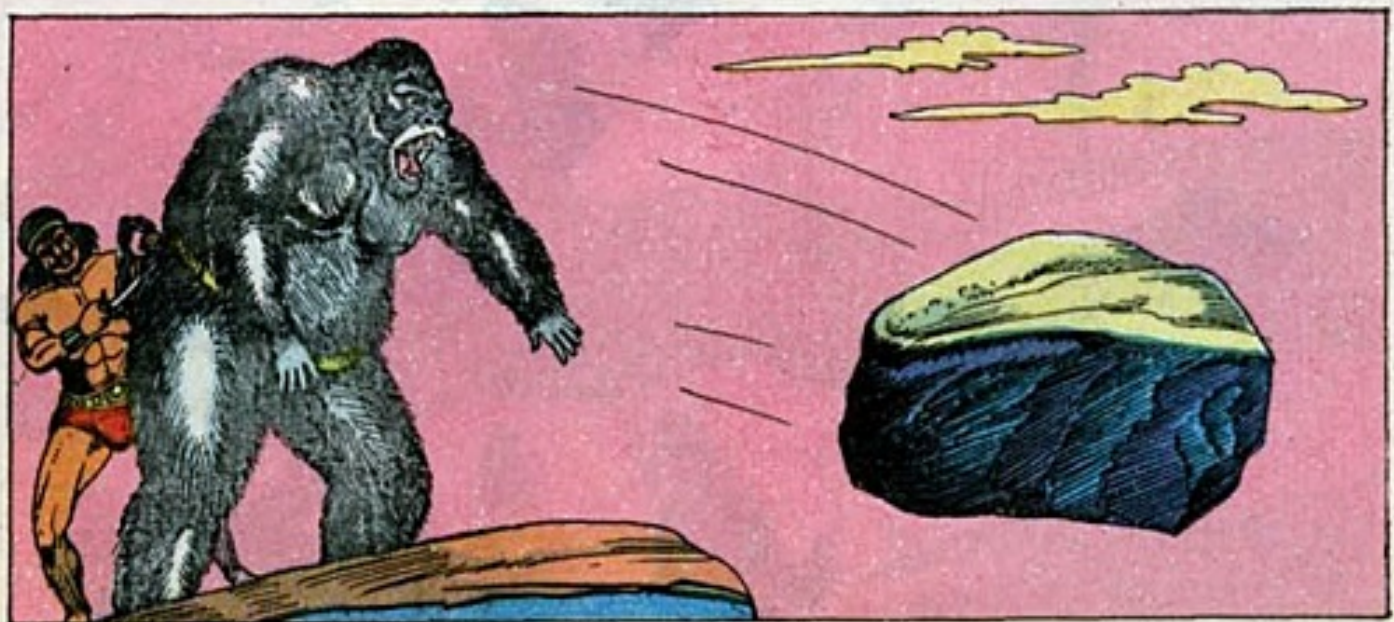
# दरबारी नौकरी

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, अगर तुम अपने प्रयत्न में सफल हो जाओगे तो परिणाम को त्याग न दो। कुछ लोग अत्यंत प्रयत्न करके विजय तो प्राप्त करते हैं, परंतु उसके द्वारा प्राप्त होनेवाले प्रयोजन को लात मारते हैं। इसके उदाहरण के रूप में मैं तुम्हें विश्वनाथ नामक एक कृषक की कहानी सुनता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: चित्रकूट के एक कृषक परिवार में विश्वनाथ का जन्म हुआ। संभवतः उसके पूर्व जन्म के पुण्य के फलस्वरूप उसे संगीत में जन्मजात प्रतिभा प्राप्त हुई। इस पर प्रसन्न हो उसके पिता ने उसे इस बात की आजादी दे रखी

## बेताल कथाएँ

कि वह अपनी इच्छा के अनुसार सारे देश में भ्रमण करते हुए संगीत का अच्छा अभ्यास कर ले। इस कारण विश्वनाथ वीणा-वादन में प्रवीणता प्राप्त करके अपने घर लौट आया और अपने पिता के साथ दिन भर खेती का काम करता और रात को घर के बाहर चबूतरे पर बैठ करके वीणा वादन के साथ गाते आनंद प्राप्त करने लगा।

दो-चार वर्ष बाद विश्वनाथ का विवाह हुआ। उसकी पत्नी मीनाक्षी ने भांप लिया कि उसका पति वीणा वादन में असाधारण प्रतिभा रखता है। संध्या के समय विश्वनाथ जब वीणा बजाता तब उसे सुनने के लिए बड़ी भीड़ लग जाती थी। उनमें संगीत के अच्छे विद्वान भी होते थे। वे विश्वनाथ के संगीत पर मुग्ध हो जाते थे।

कई लोगों ने विश्वनाथ को सुझाया– "भाई, तुम तो संगीत के प्रकांड पंडित हो! कोई भी राजा तुम्हें अपने दरबार में आदरपूर्वक संगीत का विद्वान नियुक्त कर सकते हैं। तुम दिन भर कड़ी मेहनत करके खेती के द्वारा आखिर क्या पा सकते हो?"

विश्वनाथ की पत्नी मीनाक्षी के मन में भी कुछ ऐसा ही विचार था। लेकिन विश्वनाथ के मन में राजदरबार के विद्वान बनने या उसके वास्ते दूसरों के आश्रय में जाकर अपने संगीत का प्रदर्शन करने की
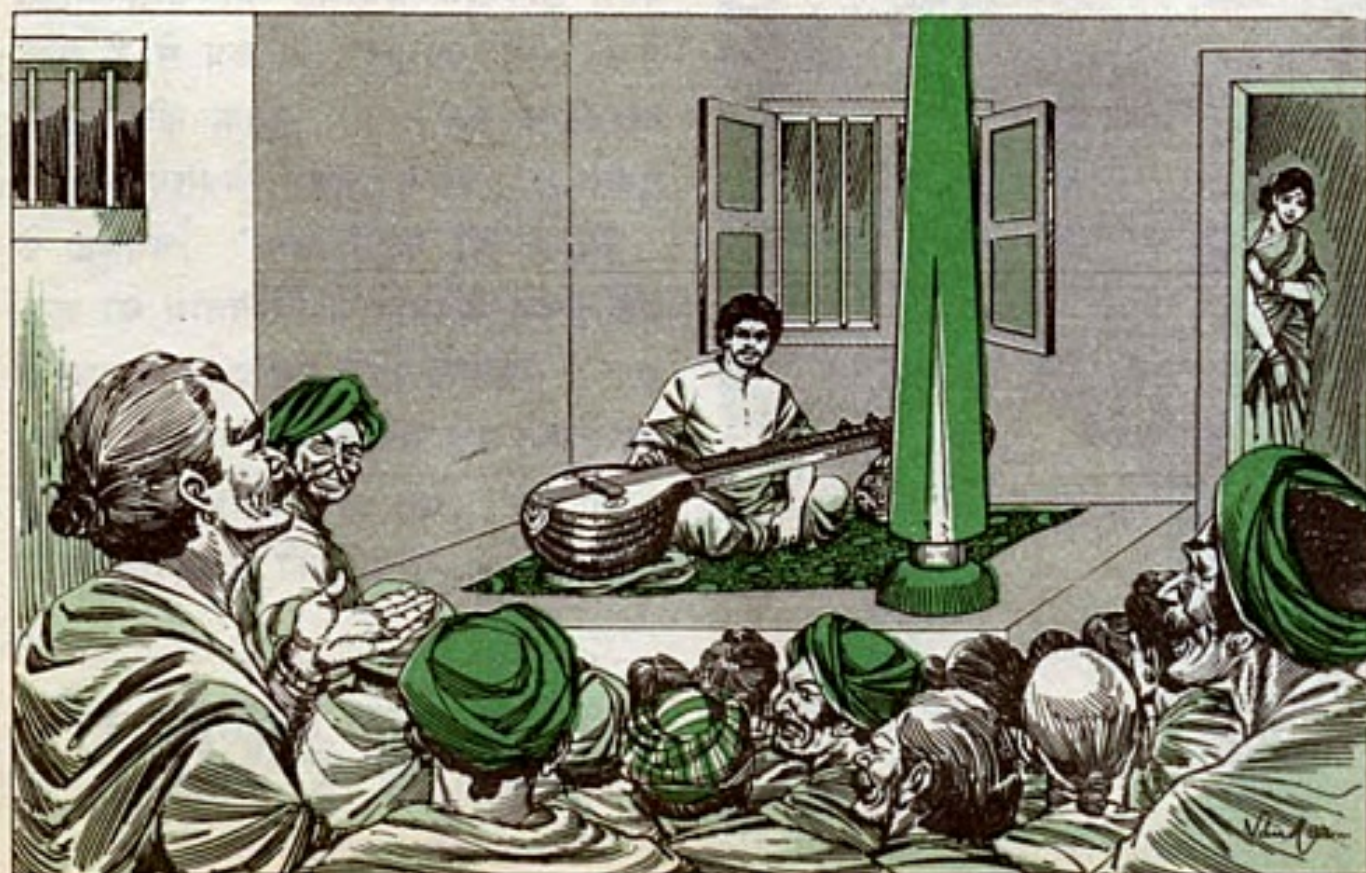
इच्छा कदापि न थी। इस बात को भांपकर मीनाक्षी ने कभी अपना विचार विश्वनाथ के सामने प्रकट न किया।

लेकिन मीनाक्षी की इच्छा किसी के प्रयत्न या सिफ़ारिश के बिना ही पूर्ण हुई। एक दिन विश्वनाथ चबूतरे पर बैठकर वीणा बजा रहा था कि कोई दो व्यक्ति आ पहुँचे, बड़ी श्रद्धा के साथ अंत तक विश्वनाथ का संगीत सुनकर चले गये। वे दोनों उस देश के राजा तथा मंत्री थे जो वेष बदलकर उस भीड़ में उपस्थित थे।

इसके थोड़े दिन बाद राजा ने विश्वनाथ को सादर अपने दरबार में बुला भेजा और उसे अपने दरबार में ऊँचा पद दे दिया। प्रारंभ में विश्वनाथ को दरबार कारागार जैसा प्रतीत हुआ, लेकिन बड़े लोगों के बीच उठने-बैठने तथा राजा से लेकर चपरासी तक उसके संगीत की प्रशंसा करते देख वह प्रसन्न रहने लगा।

उन्हीं दिनों में रत्नपुर से कुंजर नामक एक संगीत विद्वान अपने शिष्यों के साथ चित्रकूट में आया। उसकी माँग पर राजा ने विश्वनाथ तथा कुंजर के बीच संगीत की प्रतियोगिता का प्रबंध किया।

उस प्रतियोगिता में विश्वनाथ हार गया। क्योंकि विश्वनाथ वीणा-वादन में प्रवीण ज़रूर था किंतु कुंजर संगीत में असाधारण प्रतिभा रखता था। यह बात राजा तथा दरबारियों ने ही नहीं बल्कि

विश्वनाथ ने भी स्पष्ट रूप से जान ली। इस घटना के बाद विश्वनाथ के प्रति राजा तथा राजदरबारियों का आदर जाता रहा। राजा की दृष्टि में विश्वनाथ की सबसे बड़ी भूल यह थी कि वह राज्य की प्रतिष्ठा को क़ायम न रख सका। यह बात भांपकर विश्वनाथ अमित दुखी हुआ।

"आप क्यों दुखी होते हैं? विजय और पराजय ईश्वर के अधीन होते हैं।" मीनाक्षी ने समझाया।

"मैं पराजित होकर दुखी नहीं हूं। क्योंकि मैं एक योग्य व्यक्ति के हाथों में पराजित हुआ हूं, मगर राजा के व्यवहार से दुखी हूं।" विश्वनाथ ने समझाया।

इसके उपरांत विश्वनाथ ने दरबार में जाना बंद किया। संगीत की अथक साधना प्रारंभ की। छे महीने पर्यंत वह निरंतर साधना करता रहा, फिर भी उसके दरबार में न जाने पर किसी ने दर्याप्त तक नहीं किया।

छे महीने बाद विश्वनाथ रत्नपुरी पहुँचा और कुंजर को प्रतियोगिता के लिए निमंत्रित किया। उस प्रतियोगिता में कुंजर को पराजित किया। कुंजर ने परमानंदित होकर विश्वनाथ के साथ गले लगाया। अपनी पराजय को स्वीकार करते हुए विश्वनाथ की लगन की प्रशंसा की।

राजा को जब यह समाचार मिला कि विश्वनाथ कुंजर को हराकर लौट आया है, तब राजा और उसके अनुचर विश्वनाथ के घर पहुँचे। इस बात की क्षमा माँगी कि राजा ने विश्वनाथ के बड़प्पन का सही मूल्यांकन नहीं किया है। इसके बाद प्रति दिन दरबार में आने का अनुरोध किया।

विश्वनाथ ने राजा से स्पष्ट कह दिया कि वह दरबारी पद का मोह नहीं रखता है और अपने गाँव लौट रहा है। तब अपने गाँव जाकर पहले की भांति खेती करते हुए शाम के वक़्त वीणा वादन के द्वारा

श्रोताओं को प्रसन्न करनेलगा। इस प्रकार उसके दिन आराम से बीतने लगे।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, विश्वनाथ को हम किस कोटि का व्यक्ति माने? जब वह प्रतियोगिता में हार गया तब उसने प्रसन्नतापूर्वक अपनी पराजय को क्यों स्वीकार किया? अपनी हार पर दुखी न होनेवाले विश्वनाथ ने छे महीने पर्यंत भयंकर साधना करके कुंजर को क्यों पराजित किया? जिसने अपनी विजय के द्वारा राजा की सद्भावना को प्राप्त किया, उसने दरबारी पद को क्यों त्याग दिया और घर लौटकर खेती क्यों करने लगा? इन प्रश्नों का उत्तर जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "विश्वनाथ न केवल संगीत का विद्वान है, बल्कि वह संगीत का प्रेमी भी है। वह अपनी तृप्ति के वास्ते वीणा वादन करता और आजीविका के हेतु खेती किया करता था। मगर राजा की दृष्टि में पड़ने के कारण संगीत ही उसकी आजीविका का साधन बन गया। उससे भी श्रेष्ठ विद्वान ने जब उसे पराजित किया तब उसे कोई दुख न हुआ और न उसे वह अपमान की बात प्रतीत हुई। मगर इससे राजा का अपमान हुआ। इस पर विश्वनाथ ने यह साबित करने के लिए कुंजर को हराया कि कोई भी व्यक्ति महान साधना के द्वारा किसी पर विजय प्राप्त कर सकता है और संगीत-प्रियता तथा विजय-पराजय के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। मगर विश्वनाथ ने यह अनुभव किया कि संगीत को आजीविका का साधन बनाने पर कोई सुख अथवा मानसिक शांति नहीं है, यही कारण है कि उसने दरबारी नौकरी को त्याग दिया और अपने घर लौटकर पुनः खेती करने लगा।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# राजा की प्रतियोगिता

पुराने जमाने में कांभोज राज्य पर कुमारवर्मा शासन करता था। उसका विश्वास था कि समस्त विद्याओं में उसकी समता कर सकनेवाले कोई नहीं हैं और शासन के कार्यों में वह सफल व्यक्ति है।

एक बार वार्तालाप के संदर्भ में रानी कर्पूरवल्ली ने अपने पति से मजाक में बताया कि पैतृक रूप में राजा बनने में कोई महत्व की बात नहीं है, बल्कि अपनी शक्ति के बल पर राज्य का संपादन करना ही बड़ी बात है। रानी ने ये बातें परिहासपूर्वक कही थीं, पर राजा कुमारवर्मा पर इन बातों का गहरा असर पड़ा। राजा ने सोचा कि अपने बड़प्पन को रानी के समक्ष साबित करना होगा, इसके वास्ते उसने प्रतियोगिताओं का प्रबंध किया।

उन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए देश के अनेक प्रांतों मे उत्साही युवक आ पहुँचे। उन उन विद्याओं में कुशल व्यक्तियों ने निर्णायकों का कार्य किया। प्रतियोगिताएँ आखिर सफलतापूर्वक संपन्न हुई। अब केवल पुरस्कार वितरण का कार्य शेष रह गया था।

राजा कुमारवर्मा ने खड्गविद्या में प्रथम आये रामराज नामक व्यक्ति को दिखाकर कहा-"यह साबित हो गया है न कि इससे बढ़कर खड्गविद्या-प्रवीण हमारे देश में दूसरा कोई नहीं है?"

सभी दरबारियों ने स्वीकृति दी।

"इस बात का निर्णय मुझे करना होगा।" इन शब्दों के साथ राजा अपने हाथ में खड्ग लेकर रामराज के साथ युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हुआ। इस पर सभी लोग विस्मय में आ गये। रामराज तथा कुमारवर्मा के बीच बड़ी देर तक तीव्र युद्ध होता रहा। अंत में

रामराज ने कुमारवर्मा के हाथ के खड्ग को उड़ा दिया। कुमारवर्मा के चेहरे पर काटो तो ख़ून नहीं।

इसी वक़्त निर्णायकों ने घोषणा की कि रामराज ने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है। उन लोगों ने रामराज के कानों में गुप्त रूप से कुछ कहा। रामराज ने राजा कुमारवर्मा के निकट पहुँच कर हाथ जोड़ते हुए कहा–"महाराज, आप के अद्भुत कौशल के सामने न ठहरने की स्थिति में मैंने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिए फिर एक बार युद्ध करने का मौका दिलाइए।"

महाराजा पराजित होकर क्रुद्ध था, इसलिए उसने झट से रामराज को अनुमति दी। इस बार कुमारवर्मा ने रामराज के हाथ के खड्ग को बड़ी आसानी से उड़ा दिया। पुरस्कार राजा को प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार साहित्य-गोष्ठी में सबको पराजित करनेवाले विद्यानाथ को राजा ने ललकारा। दोनों के बीच चर्चा चल रही थी, तभी निर्णायकों ने यह घोषणा करके पुरस्कार राजा को दिया कि विद्यानाथ ने अनेक व्याकरण की गलतियाँ की हैं।

इसी भांति सभी क्षेत्रों के पुरस्कार राजा ने जीत लिए। इस प्रकार एक

वर्ष नहीं, लगातार पाँच साल कुमारवर्मा ने प्रतियोगिताओं में स्वयं सभी पुरस्कार प्राप्त किये। यह बात उसने रानी को बताई, पर रानी मुस्कुराकर चुप रह गई।

उन्हीं दिनों में कुमारवर्मा को एक भयंकर समाचार प्राप्त हुआ। मंत्री भैरव अनेक दिनों से राज्य को हड़पने का षड़यंत्र कर रहा है। उसकी योजना लगभग पूरी हो चुकी है। किसी भी क्षण भैरव गद्दी पर बैठ सकता है।

यह समाचार मिलते ही राजा कुमारवर्मा अपनी पत्नी के साथ गुप्त रूप से वेष बदल कर राजधानी से भाग निकला। अब राजा एक साधारण मानव था।

उधर कुमारवर्मा तथा कर्पूरवल्ली अपने राज्य के किसी कोने में स्थित एक छोटे से गाँव में पहुँचे। अपने नाम बदल कर गरीबों की भांति मेहनत करके अपने दिन बिताने लगे। जनता के बीच अपने दिन काटते कुमारवर्मा ने उनकी जरूरतों को समझा और उनके सुख-दुखों का अनुभव किया। अब जाकर उसने भली-भांति समझ लिया कि उसका शासन जनता के लिए हितकारी न रहा था।

उस वर्ष भी राजा को यह खबर मिली कि पहले की भांति इस साल भी प्रतियोगिताएँ होनेवाली हैं। वह बहुत प्रसन्न हुआ। मगर उन प्रतियोगिताओं को लेकर युवकों में किसी भी प्रकार का उत्साह न देख वह आश्चर्य में आ गया। उसने कई लोगों से इसका कारण पूछा। सबने कहा–"इन प्रतियोगिताओं का मतलब ही क्या रहा? सारे पुरस्कार राजा को ही प्राप्त हो जायेंगे! ऐसी हालत में हम क्यों उनमें भाग ले!"

कुमारवर्मा यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि जनता ने उसकी प्रतिभा को स्वीकार कर लिया है। लेकिन उस समय का राजा भैरव राजतंत्र को छोड़ और किसी विद्या में सामर्थ्य नहीं रखता था। इस कारण कुमारवर्मा यह सोचकर राजधानी की ओर चल पड़ा कि वह उन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त कर ले।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कुमारवर्मा विजयी हुआ।

सभी क्षेत्रों में विजयी हुये व्यक्तियों को अंत में राजा भैरव ने अंतिम प्रतियोगिता के लिए ललकारा! उसके तथा कुमारवर्मा के बीच खड्ग युद्ध हुआ। कुमारवर्मा ने कुछ ही क्षणों में भैरव को बेहथियार कर दिया। तुरंत निर्णायकों ने बताया कि कुमारवर्मा ने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है, वरना राजा भैरव ही विजयी हो जाते! इसके बाद उन लोगों ने कुमारवर्मा को अलग ले जाकर समझाया–

"पगले, तुम एक व्यक्ति के साथ स्पर्धा नहीं कर रहे हो! एक बड़े पद के साथ कर रहे हो। तुम्हें भैरव के हाथों में हारने का नहीं, सिंहासन के समक्ष हारना था! तुम राजा से क्षमा माँग लो और एक और मौक़ा माँगकर इस बार उनके हाथों में हार जाओ, वरना तुम खतरों में फँस जाओगे!"

लाचार होकर कुमारवर्मा ने भैरव को विजयी होने दिया। तब जाकर कुमारवर्मा की समझ में यह बात आई कि उसके राजपद पर रहते कैसे वह सभी पुरस्कार प्राप्त कर पाया!

जब कुमारवर्मा गाँव को लौट आया, तब कुछ लोगों ने उसे ठोका—"क्या हुआ? राजा भैरव ही जीत गये हैं न? इसके वास्ते तुम नाहक़ राजधानी में गये ही क्यों? अगर तुम पुरस्कार पाना चाहते हो तो तुम्हें राजा बनना होगा।"

उधर भैरव के शासन में जनता का शोषण बढ़ता जा रहा था। इसे भांप कर कुमारवर्मा देशाटन पर निकल पड़ा। साहसी युवकों को अपने दल में मिला लिया और गुप्त रूप से एक सेना तैयार की। उस सेना के नायक के पद के लिए प्रतियोगिताएँ चलाई गईं। उन प्रतियोगिताओं में कुमारवर्मा विजयी हुआ और वह सेनापति चुना गया। इसके बाद कुमारवर्मा ने फिर से अपना राज्य पाने के लिए एक अच्छी योजना बनाई।

दूसरे साल की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कुमारवर्मा अपनी सेना के साथ चल पड़ा और सभी प्रतियोगिताओं में वह विजयी हुआ।

इसके बाद भैरव ने कुमारवर्मा को खड्ग युद्ध के लिए ललकारा। कुमारवर्मा ने बड़ी सुगमता के साथ भैरव के हाथ के खड्ग को उड़ाया और अपनी तलवार को भैरव की छाती पर टिका कर जनता को संबोधित कर कहा—"इस दुष्ट ने मेरा बध करना चाहा। मगर इसके विश्वासपात्रों के द्वारा चेतावनी देने पर में प्राणों के साथ बच निकला। मैं एक जमाने में आप लोगों का राजा कुमारवर्मा हूँ। यह भैरव अगर जनता पर अच्छा शासन करता तो मैं इसके काम में दखल न देता। मैं जनता के कल्याण के वास्ते आगे आया हूँ। तुम लोग मुझे फिर से राजा के रूप में स्वीकार करोगे या मुझे इस गद्दी के वास्ते युद्ध करना होगा?" इन शब्दों के साथ कुमारवर्मा ने अपनी नकली पोशाकें हटा दीं।

दरबारियों ने कुमारवर्मा को पहचाना और जयकार किये। बिना खून खराबी के राज्य कुमारवर्मा के हाथों में आ गया।

इस पर रानी कर्पूरवल्ली ने अपने पति से पूछा—"यदि आप पहले ही अपनी सेना को बता देते कि आप ही कुमारवर्मा हैं तो आप कभी राजा बन गये होते?"

"मैंने इस बार राज्य को पैतृक संपत्ति के रूप में नहीं, बल्कि अपनी शक्ति के बल पर प्राप्त करना चाहा। अब अपनी शक्ति पर मेरा विश्वास जम गया, इसलिए मैं जो प्रतियोगिताएँ चलाता हूँ, उनमें मुझे भाग लेने की जरूरत नहीं है।" राजा ने कहा।

इसके उपरांत राजा ने प्रतियोगिताओं में भाग लेना बंद किया, इस कारण राज्य की तरफ़ से चलाई जानेवाली प्रतियोगिताओं ने वास्तविक सामर्थ्य रखनेवाले युवकों को अपनी ओर आकृष्ट किया।

# भाग्य का भरोसा

मदुरापुर में गोपीनाथ नामक एक आवारा था। उस गाँव के काली मंदिर के पुजारी दीक्षित की दृष्टि उस पर पड़ी। दीक्षित को गोपीनाथ जैसे व्यक्ति की बड़ी ज़रूरत थी।

गाँव की हालत जब खराब थी, उन दिनों में ग्रामवासी कालीमाता पर अपना पूरा भरोसा रखे हुए थे और उन्हें मनौतियाँ, भेंट और नैवेद्य चढ़ाया करते थे, इस कारण पुजारी दीक्षित की पांचों उंगलियाँ घी में रहा करती थीं।

हाल ही में गाँव की हालत सुधर गई, सभी सुविधाएँ मिल गईं। फ़सलें भी अच्छी होने लगी थीं। अस्पताल के खुल जाने से जनता बीमारियों के शिकार होने से बच गई थी। जो भी बीमारियाँ होतीं, वे कालीमाता की कृपा के बिना दवाइयों के द्वारा अच्छी हो जाती थीं।

ग्रामवासियों का देवी के प्रति ज्यों ज्यों डर घटने लगा, त्यों त्यों दीक्षित की आमदनी भी घटती गई। इस कारण जनता में भगवान के प्रति डर पैदा करने के लिए उसे कोई न कोई नाटक रचना होगा। इसके वास्ते दीक्षित को गोपीनाथ जैसे एक आवारे की ज़रूरत है। इसलिए दीक्षित ने गोपीनाथ को अपने यहाँ आश्रय दिया, भक्तों के द्वारा देवीजी को प्राप्त होनेवाले नैवेद्य गोपीनाथ को खिलाता, जब-तब छुट्टे पैसे खर्च के लिए दे देता।

जब गोपीनाथ का विश्वास दीक्षित पर जम गया, तब दीक्षित ने उसे समझाया– "सुनो बेटा, तुम मेरी बातों का हूबहू पालन करोगे तो तुम बदनामी से बचकर अच्छा व्यक्ति कहलाओगे। यदि मेरी चाल चल गई तो तुम को मैं मासिक वेतन दूँगा।" इन शब्दों के साथ गोपीनाथ को

जगदीश प्रसाद

लड़के में देवी का आवाहन हो गया है।"
उसी वक़्त अचानक दीक्षित नीम की टहनियों के साथ वहाँ पर आ पहुँचा, उसने पूछा—"देवी, तुम कौन हो?"

गोपीनाथ ने पुजारी दीक्षित के केश पकड़ पर ढकेल दिया और कहा—"अरे मूर्ख, तुमने मुझे नहीं पहचाना?"

पुजारी नीचे गिर पड़ा था, वह साष्टांगदंड़वत करके बोला—"कालीमाता! तुम हो! हमारी रक्षा करो! अपराध हो गया है, माईजी! हमें बचाओ।"

"अबे, मैं इस गाँव को मशान कर दूंगा! मुझे भूख लगी है, खिलाओ।"

"देवी! खाना खिलायेंगे! तुम शांत हो जाओ!" पुजारी दीक्षित ने समझाया।

इसके बाद लगा कि गोपीनाथ बेहोश हो गया है! उसके मुंह पर पानी छिड़कने के बाद वह इस तरह उठ बैठा, जैसे नींद से जागता हो।

पुजारी ने जो नाटक रचा, वह व्यर्थ न गया। ग्रामवासी देवी से डरकर अधिक मात्रा में मनौतियाँ करने लगे! दीक्षित की आमदनी बढ़ने लगी। देवी का प्रवेश होने के बाद ग्रामवासी गोपीनाथ का आदर करने लगे। वह रोज शाम को मंदिर में जाता, रात तक वही बिता देता, दीक्षित जो कुछ देता, ले आकर

दीक्षित ने कोई युक्ति बताई। दीक्षित के द्वारा सारी बातें सुनने के बाद गोपीनाथ ने उस नाटक में अपना पात्र अदा करने की स्वीकृति दी।

शाम को घर लौटते ही गोपीनाथ धड़ाम से गिर पड़ा। उसके माँ-बाप ने सोचा कि पित्त की अधिकता के कारण उसे ऐसा हो गया। गोपीनाथ आवारा-गर्दी करता था, इस पर उसका पिता गुस्से में आकर उसे पीटने को हुआ, इस पर गोपीनाथ चिल्लाकर बोला—"अबे, मैं तुम्हें खा जाऊँगा। जानते हो, मैं कौन हूँ?"

उस रास्ते से चलनेवाले लोगों ने इस विचित्र दृश्य को देख कहा—"इस

घर में सौंप देता, इस कारण घर में भी गोपीनाथ का आदर होने लगा।

जब देवी के प्रति ग्रामवासियों का विश्वास जमा, तब गाँव के सभी लोग रोज कालीमाता के मंदिर में जाते और देवी को प्रणाम करके लौट आते, पर यह परिवर्तन गोपीनाथ को अच्छा न लगा।

थोड़े दिन बाद गोपीनाथ ने पुजारी से स्पष्ट कह दिया कि आइंदा वह यह नाटक नहीं रच सकता है। पुजारी ने और अधिक धन देने का उसे लोभ दिखाया, पर गोपीनाथ ने इनकार किया।

दीक्षित का कलेजा कांप उठा। उसने संभलकर कहा–"तब तो एक काम करो। मैं देवी के आवाहन होने का अभिनय करूँगा, तुम नीम की टहनियाँ हाथ में ले मंत्र फूँकने का काम करो।"

गोपीनाथ नरम पड़ गया। धन तो बिना मेहनत के मिलता जो है! फिर भी इस स्वांग के रचने पर उसके घर के लोग भाग्य के भरोसे बैठ जाय तो क्या होगा? यों सोचकर उसने इस नाटक का समाचार अपने परिवार के लोगों को बताने का निश्चय कर लिया।

इस बीच पुजारी के दिमाग में एक और उपाय सूझ पड़ा। वह यह कि गोपीनाथ अंधेरे में उठकर चला आता,

मंदिर में कालीमाता की मूर्ति की आड़ में छिप जाता, गुप्त रूप से बंधे रस्सों को खींचकर भक्तों के मंदिर के प्रवेश के समय मंदिर के द्वारों को खोल देता। ग्रामवासी यह विश्वास करके कि मंदिर के द्वार अपने आप खुल रहे हैं, देवी के प्रति अपनी श्रद्धा और अधिक प्रदर्शित करते!

पुजारी दीक्षित ने यह उपाय गोपीनाथ को बताया। यह नाटक भी थोड़े दिन तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ग्रामवासियों का अपनी ग्रामीणदेवी के प्रति अखण्ड विश्वास जम गया। इस अंधविश्वास के कारण उन लोगों ने मेहनत करना छोड़ दिया और पूजा-भजन में

लग गये। खेतों में जाना बंद किया। गोपीनाथ ने भांप लिया कि गाँव की आर्थिक दशा बिगड़ती जा रही है। उसके मन में पुजारी के प्रति असहनीय क्रोध और अपने प्रति घृणा उत्पन्न हुई।

इसके दूसरे दिन मंदिर के द्वार अपने आप नहीं खुले। भक्त यह सोचकर फिर से चिंता में डूब गये कि न मालूम गाँव पर कैसी विपदा आनेवाली है।

बड़ी देर बाद गोपीनाथ नीम की टहनियाँ लेकर आ पहुँचा। पुजारी ने झट से देवी के आवाहन होने का अभिनय किया, वह चिल्लाने लगा-"अबे, तुम लोगों को मैं मार डालूँगी। सारी फ़सल मुझे नैवेद्य के रूप में चढ़ा दो। वरना मेरा क्रोध शांत न होगा।"

गोपीनाथ नीम की टहनियों से पुजारी को सहलाने लगा। उन टहनियों के बीच केवांच के पौधे थे जिसकी वजह पुजारी को असहनीय खुजलाहट होने लगी। वह जोर-शोर से चिल्लाने लगा।

गोपीनाथ पुजारी को टहनियों से पीटते गरज उठा-"देवी, तुम उतर आओगी कि नहीं? इस गाँव को छोड़ जाओगी या नहीं? तुम्हें भेंट चढ़ाने के लिए यहाँ पर धान के ढ़ेर थोड़े ही लगे हैं?"

फिर क्या था, पुजारी का खेल बंद हुआ; खुजलाहट और मार सहते देवी के आवाहन का अभिनय करना उसके लिए कठिन हो गया।

"चली जाऊँगी...चली जाती हूँ..." यों कहते पुजारी सचमुच बेहोश हो गया।

इसके बाद गोपीनाथ ने भक्तों को समझाया-"कालीमाई हमारे गाँव को छोड़ चली गई है। अब तक हमारे गाँव की सीमा पारकर गई होगी! जब तक हम अपने काम करते रहेंगे तब तक वह हमें छेड़ेंगी नहीं!" इसके बाद मंदिर के उजड़ने तथा गाँव के सुधरने में ज्यादा दिन न लगे!

पुजारी ने भी खेती करना शुरू किया। आवारा गोपीनाथ कालीमाता को भगानेवाले के रूप में प्रसिद्ध हो गया।
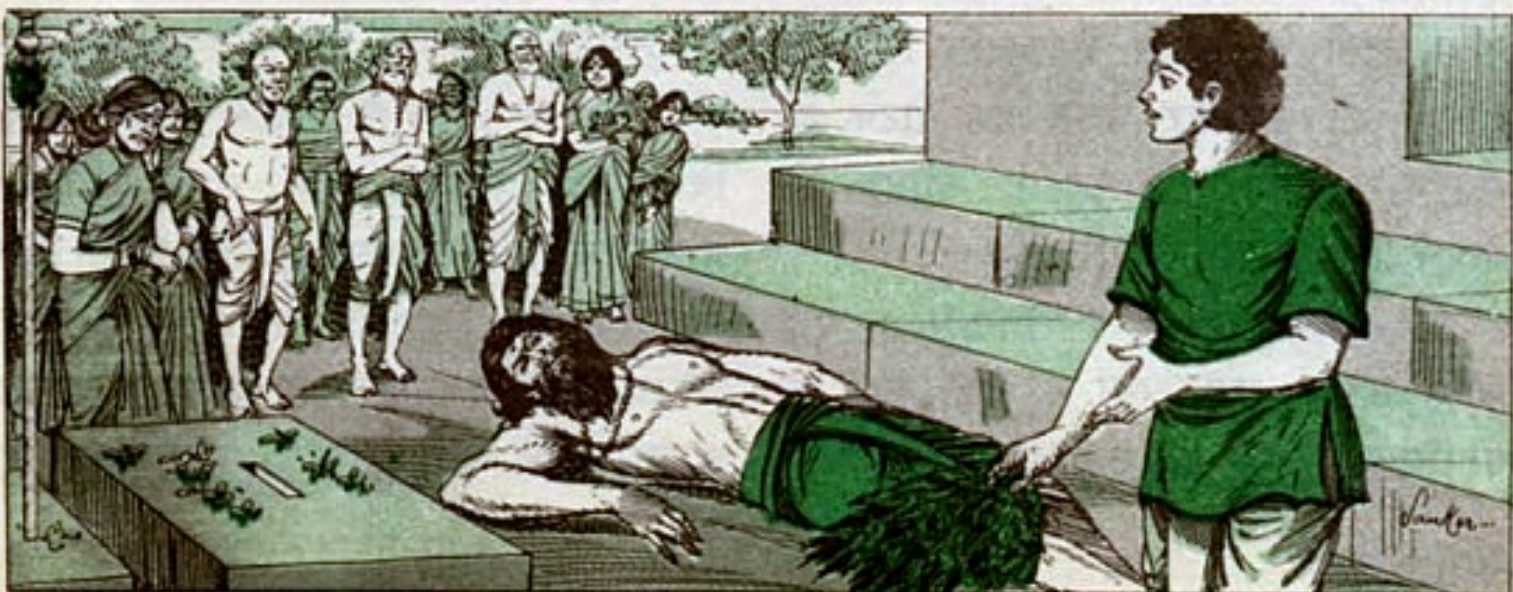
# दानशीलता

अश्वमेध याग करने के बाद अपार दान करके युधिष्ठिर इस बात पर गर्व करने लगे कि उनसे बढ़कर कोई दानी संसार भर में दूसरे कोई नहीं हैं।

यह बात भांपकर श्रीकृष्ण एक बार युधिष्ठिर को पाताल लोक में ले गये। वहाँ के राजा बलि ने कृष्ण का अतिथि-सत्कार किया, पर युधिष्ठिर के कुशल-क्षेम तक न पूछा। इस पर कृष्ण ने बलि को युधिष्ठिर का परिचय कराते हुए कहा–"ये महाशय युधिष्ठिर हैं। इन्होंने जितने दान-धर्म किये, उतने किसी भी युग में किसी ने नहीं किये।"

राजा बलि ने अपने कान बंद करते हुए कहा–"मैंने कैसी बुरी ख़बर सुनी! दान-धर्म करके बड़ा व्यक्ति बनने से बढ़कर नीच कार्य कौन सा है? मेरे राज्य में दान-धर्म पाने के लिए क्या कोई आगे आयेगा? क्यों कर आयेंगे? सभी लोग मेरे बराबर जो हैं।"

ये बातें सुनने पर युधिष्ठिर का मस्तक झुक गया।

# सतीपुर के निवासी

सतीपुर के निवासी खेतीबारी में प्रवीण थे। लेकिन उनका जीवन सुखमय न था। जिन दिनों काम न होते और बुआई के वक़्त भी उन्हें अमीरों से उधार लेना पड़ता था। जब फ़सल कटकर घर में आ जाती, तब उनकी मेहनत की सारी आमदनी कर्ज चुकाने में चुक जाती थी। उनकी गरीबी और यातनाओं का कोई अंत दिखाई न देता।

जुगलप्रसाद नामक एक जमींदार था जो बड़ा धनी था। उसके अपना कहने वाला कोई न था, फिर भी बड़ी किफ़ायत के साथ वह धन जोड़ता, जरूरतों के पीछे भी ख़र्च करने में उसका मन कचोट उठता।

उसी गांव में दो और अमीर थे, वे जुगल प्रसाद जैसे धनी न थे, पर वे गरीब किसानों को धन और धान उधार में देकर अपना कर्ज बड़ी निर्दयता के साथ ब्याज सहित उनसे वसूल किया करते थे।

उस गाँव के अधिकांश निवासी काले अक्षर भैंस बराबर थे, वे खेती करना छोड़ कुछ जानते न थे। मगर उस गाँव के सुनार का लड़का गोपाल सतीपुर से तीस मील की दूरी पर स्थित एक शहर में पढ़ा करता था। उसके काका की सोने की दूकान उस शहर मे थी। वह शहर में रहा करता था, इसलिए दुनियादारी बातें वह ज्यादा जानता था। वह यह भी जानता था कि उसके गाँव के निवासी ऋणी बनकर किस तरह यातनाएँ झेल रहे हैं। इस बात का उसे बड़ा दुख था। उसने शहर में सुन रखा था कि गाँव का जीवन तथा वहाँ की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए सहकारी संस्थाएँ कैसे सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

ए. सी. सरकार, जादूगर

शहर में गोपाल का एक मित्र था गंगाधर। गंगाधर का बड़ा भाई इन्द्रनाथ एक सामाजिक कार्यकर्ता था। उसने गोपाल के गाँव की बुरी हालत सुनकर सलाह दी कि आर्थिक सहकारी संस्था की स्थापना से उस गाँव की हालत कैसे सुधर सकती है! लेकिन प्रारंभ में थोड़े मूल धन की आवश्यकता है।"

"मूल धन देनेवाले सूदखोर जनता को जोंकों की भाँति चूस रहे हैं। क्या सहकारी संघ के द्वारा उनका व्यापार बंद न होगा?" गोपाल ने पूछा।

"तब तो तुम्हारे गाँव के गरीब किसानों के सुधरने का कोई मार्ग नहीं है?" इंद्र ने कहा।

"जुगल प्रसाद मामा को हम अगर समझा सकें तो हमारा काम बन सकता है। वे सूदखोर नहीं हैं, लेकिन अव्वल दर्जे के कंजूस हैं। हम उनसे एक भी पैसा वसूल नहीं कर सकते!" गोपाल ने असली बात बताई। गंगाधर ने उनकी बातचीत में दखल देते हुए पूछा—"क्या जुगल प्रसादजी अंधविश्वासों के गुलाम हैं?"

"ऐसे सुदूर देहात में अंधविश्वासों की कमी ही क्या है?" इंद्र ने कहा।

"तब तो मैं अपने जादू के द्वारा उनमें विश्वास पैदा कर सकता हूँ। मैं थोड़ा-बहुत इंद्रजाल जानता हूँ। लेकिन मैं एक बार उन्हें देखना चाहता हूँ।" गंगाधर ने कहा।

एक दिन गोपाल, इंद्र तथा गंगाधर साइकिलों पर रवाना हो संध्या तक सतीपुर पहुँचे। गोपाल के घर उन लोगों ने वह रात बिताई।

दूसरे दिन प्रात:काल इंद्र एक ज्योतिषी का अभिनय करते ग्राम वासियों का भविष्य बताने लगा। ज्योतिष विद्या में उसका थोड़ा-बहुत प्रवेश था, इस कारण थोड़े ग्रामवासी उसकी बातों पर विस्मय में आ गये। गोपाल ने यह खबर किसी के जरिये जुगलप्रसाद तक पहुँचाई, इस पर

वह दौड़ते हुए आ पहुँचा और अपना भविष्य जानने के लिए उसने हाथ बढ़ाया।

इंद्र ने उससे कहा—"मैं आप की हस्त-रेखाएँ यहाँ पर नहीं देखूँगा। मैं खुद आप के घर पहुँच कर वहीं देखूँगा।"

गोपाल ने इसके पूर्व ही एक बार अपने गाँव पहुँच कर आवश्यक सारी चीजों का इंतज़ाम कर रखा था। उस दिन शाम को गोपाल, इंद्र तथा गंगाधार जुगल प्रसाद के घर पहुँचे।

इंद्र ने जुगलप्रसाद की हस्त-रेखाएँ देख कहा—"आप सचमुच भाग्यवान हैं। न मालूम क्यों, लक्ष्मीदेवी धनियों का ही वरण करती हैं, लेकिन मेहनत करनेवाले गरीबों पर दया नहीं करतीं। आज ही आप को एक छोटा सा खज़ाना हाथ लगने वाला है!"

इसके बाद इंद्रनाथ ने जुगल प्रसाद का हाथ और बारीकी के साथ देखा, तब कहा—"क्या आप के अहाते में आग्नेय दिशा में कोई आम का पेड़ है? उसके समीप में अपने आप उगा हुआ बैंगन का एक पौधा होगा। उसके नीचे चाँदी के सिक्कों का खज़ाना होगा! आप उसे खोद ले आइएगा!" यह बात सुनते ही जुगलप्रसाद की आँखें आशा के मारे चमक उठीं। वह अपने हाथ में लालटेन तथा फावड़ा लेकर अकेले चला गया।

उसके लौटने के अन्दर गंगाधर ने कांच का एक गिलास लेकर कमरे के एक कोने में ऊँचे आसन पर उसे रखा और मायाजाल करने को तैयार हो गया।

आधा घंटे के बाद जुगलप्रसाद एक मिट्टी की कमोरी के साथ लौट आया। उसे उसने इंद्र के सामने रखा। इंद्रनाथ ने बड़ी सावधानी से उसके ढक्कन की सील निकाली और कमोरी को जमीन पर उलटा दिया। उसमें जंग लगे विकटोरिया महारानी की मुहरवाले पचास रुपये थे। जुगलप्रसाद की आँखें चमक उठीं। उसने गद्‌गद्‌ स्वर में कहा—"महाशय, आप की

सामर्थ्य अद्भुत है! मैंने ऐसे ज्योतिषी को कहीं नहीं देखा है!"

गोपाल ने वे रुपये अपने काका के यहाँ से लेकर रासायनिक पदार्थों के द्वारा उनमें जंग लगवा दी थी। उन्हें एक कमोरी में डालकर ढक्कन बंद किया, जब वह दो सप्ताह पूर्व अपने गाँव गया था, तब उसने उस कमोरी को एक जगह गाड़ दिया था।

इसके बाद इंद्रनाथ ने जुगलप्रसाद के दायें हाथ को अपने हाथ में ले सावधानी से जांचकरके कहा-"आप से एक बात और बतानी है! आप ने तिजोरी में जो धन छिपा रखा है, उसके गायब हो जाने की संभावना है। वे रुपये बंधन मे रहने को तैयार नहीं हैं, यदि आप तुरंत उनके बारे में सावधानी नहीं बरतेंगे तो आप की तिजोरी से अदृश्य हो जाने का खतरा है।"

ये बातें सुन जुगलप्रसाद ने अविश्वास पूर्ण दृष्टि से इंद्र की ओर देखा।

"आप शायद मेरी बात पर विश्वास नहीं कर रहे हैं। एक काम कीजिएगा! आप तिजोरी में से एक रुपया लाकर इस आदमी के हाथ दे दीजिए।" इन शब्दों के साथ उसने गंगाधर की ओर इशारा किया।

जुगलप्रसाद ने तिजोरी में से एक रुपया लाकर गंगाधर के हाथ दिया। गंगाधर ने उसे ऊँचे आसन पर रखे गिलास में डाल दिया। "अब आप अपनी तिजोरी के रुपये का हाल देखिए!" इंद्रनाथ ने कहा।

दूसरे ही क्षण रुपया हिल उठा और गिलास में से बाहर जाने का प्रयत्न करने लगा। वह थोड़े ऊपर तक उठा और फिर गिर पड़ा। इसके बाद वह गिलास में उछलने लगा। जुगलप्रसाद मुँह खोल आँखें विस्फारित करके उस दृश्य को देखता रहा। थोड़ी देर बाद उसने पूछा–"मुझे अपने धन के भागने से क्या करना होगा? इसके लिए आप कैसी सलाह देंगे?"

"आप वक़्त पर गरीबों की सहायता कीजिए।" इंद्रनाथ ने समझाया।

"मैं और लोगों की भांति सूद पर उधार नहीं देता। ऐसी हालत में मैं कैसी सहायता कर सकता हूँ?" जुगलप्रसाद ने कहा।

"आप एक काम कर सकते हैं। यह गोपाल तो आप ही के गाँव का निवासी है। शिक्षित है और विश्वासपात्र भी। आप इससे पूछ लीजिएगा कि किसानों का कैसे उपकार किया जा सकता है! आप का धन जब और लोगों के हित के कार्यों में लगेगा, तब वह सुरक्षित भी होगा।" इंद्र ने कहा।

इसके बाद गोपाल की सलाह पर जुगलप्रसाद ने सतीपुर के सहकारी संघ के लिए आवश्यक मूल धन दिया। ज़रूरत के समय किसानों ने उस मूल धन से कम ब्याज पर उधार लिया। इस प्रकार गाँव की आर्थिक दशा सुधर गई। ग्रामवासी सुखी बने, सूदखोरों के खेल बंद हुए।

अब सवाल यह है कि गंगाधर ने कांच के गिलास के रुपये को कैसे हिलाया? उसके हाथ में अत्यंत पतला मज़बूत काला धागा था। उसके छोर पर मोम चिपकाकर गंगाधर ने अपने हाथ में रखा, तब रुपये के साथ वह मोम चिपकाकर गिलास में डाल दिया। धागे का दूसरा छोर गोपाल के हाथ में था। उस अंधेरे में निकट से देखने पर भी धागा दिखाई न देता था। उस रुपये को हिलानेवाला व्यक्ति गोपाल ही था।

# शत्रुता पर विजय

एक शहर में अड़ोस-पड़ोस में सुजानसिंह और भोलाप्रसाद निवास करते थे। उन दोनों के बीच कई वर्षों से गहरी दुश्मनी थी। कहा जाता है कि शत्रुता अग्नि की भांति दहन करती है, इसलिए शत्रुशेष एवं ऋण-शेष नहीं होना चाहिए! इस कारण उन पड़ोसियों ने एक दूसरे का सर्वनाश करना चाहा।

एक बार सुजानसिंह की दो बकरियों ने रस्से तोड़कर भोलाप्रसाद के पिछवाड़े में प्रवेश किया और उसके फूल तथा तरकारियों के पौधे चर डाले। भोलाप्रसाद को बड़ा गुस्सा आया। उसने दोनों बकरियों को पकड़कर काट डाला और उनके कलेवरों को सुजानसिंह के पिछवाड़े में फेंक दिया। इसके थोड़ी देर बाद सुजानसिंह कुदाल ले आया। इसे देख भोलाप्रासाद लाठी लेकर लड़ने को तैयार हो गया।

लेकिन सुजानसिंह ने शांत स्वर में कहा—"भोलाप्रसाद, मुझे क्षमा कर दो। मेरी असावधानी के कारण मेरी बकरियों ने तुम्हारे पौधों को नष्ट किया, मैं फिर से आलाव बनाकर पौधे रोप देता हूँ।"

भोलाप्रसाद का सिर शर्म के मारे झुक गया। वह रोनी सूरत बनाकर बोला—"सुजान भाई, गलती मेरी है। मैंने मारे क्रोध के पागल होकर तुम्हारी निरीह बकरियों को मार डाला। मुझे माफ़ कर दो।" इसके बाद उनकी शत्रुता जाती रही।
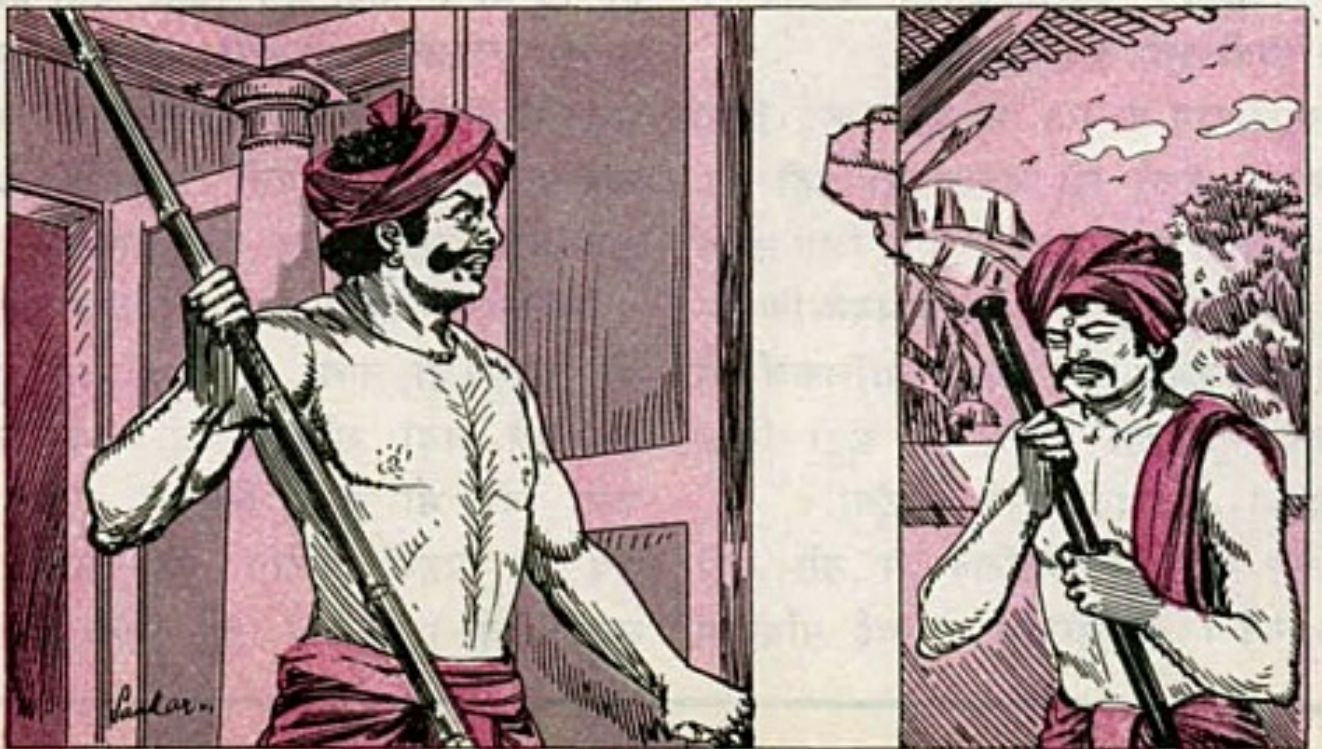
# कला-प्रियता

लक्खीराम मुखिये के घर का नौकर था। वह मुखिये के घर के पिछवाड़े में एक झोंपड़ी में रहा करता था। उसका स्वर मीठा था, वह अक्सर गीत गाता था।

मुखिये की पत्नी ने एक बार उसे खाना खिलाते हुए समझाया—"अरे लक्खीराम! तुम आखिर कितने दिन यों अकेले रहोगे? किसी अच्छी लड़की के साथ शादी क्यों न करते?"

लक्खीराम के मन में इधर कई दिनों से शादी करने की इच्छा हो रही थी, लेकिन शादी का प्रयत्न करने के लिए उसके पास समय न था। उसने निवेदन किया—"मालिकिनजी, आप कृपया मालिकजी से कहकर मुझे एक हफ्ते की छुट्टी दिला दीजिए। मैं शादी करके लौटूंगा।"

फिर क्या था, मालिक से उसे छुट्टी मिल गई। लक्खीराम ने कई गाँवों में जाकर कन्या देखी, आखिर एक गुणवती कन्या के साथ शादी करके घर लौटा। उस युवती का नाम चन्द्रकला था। सब कोई उसे 'कला' पुकारा करते थे।

कला वैसे पांडित्य नहीं रखती थी, मगर लोकगीतों की तर्ज पर गीत लिखने की प्रतिभा उसे जन्म के साथ प्राप्त हो गई थी। कड़ी धूप पड़ती, वर्षा होती, बादल गरजते, बिजली कौंधती, कहीं शादियाँ होतीं या त्योहार पड़ते तो कला उन पर गीत लिख देती। वे गीत मधुर होते और उसके भाव गुदगुदानेवाले थे।

मुखिये की पत्नी कला को बहुत चाहती थी, साथ ही कला के गीतों को सुनने का उसे बड़ा शौक-सा हो गया था। कला जो भी गीत लिखती, उसे वह सब से पहले मुखिये की पत्नी को सुना देती। मुखिये की पत्नी ने ही

रेणुका वर्मा

सर्वत्र प्रचार किया कि कला बढ़िया गीत रचती है।

इसे देख लक्खीराम का एक मित्र ईर्ष्या से भर उठा। क्योंकि उसकी पत्नी का नाम लेनेवाला कोई न था, वह तो एक जंगली जानवर जैसी थी!

उसने एक दिन लक्खीराम से कहा– "अबे, मैंने सुना है कि तुम्हारी औरत गीत रचती है? तुम तो काले अक्षर भैंस बराबर हो! तुम अगर अपनी पत्नी को यों आजादी दोगे तो क्या वह तुम्हारा आदर करेगी? अरे चौका बर्तन करके दिन काटनेवाली औरत का गीत रचना और दस लोगों को सुनना शर्म की बात नहीं है? तुम उसे जरा नियंत्रण में रखो, अगर उसके गीत रचने से रोकोगे नहीं तो वह थोड़े दिन बाद घमण्ड में आकर तुम्हारे सर पर सवार हो जाएगी! फिर तुम्हारी जैसी इच्छा! तुम्हीं जानो! मैं तुम्हारी भलाई के लिए कहता हूँ!"

लक्खीराम ने सोचा कि उसका मित्र उसकी भलाई के लिए ये बातें कह रहा है, उसे भी खुद लगा कि उसकी बातों में बहुत कुछ सचाई है। जब वह घर पहुँचा, उसने देखा, संयोग से कला कोई गीत लिख रही थी। "सुनो, जब देखो, तब बेकार ये गीत लिखते बैठी रह जाती हो! मेरे लौटने तक तुम मुखिये की भैंसों के दूध क्यों नहीं दुहती? उपले क्यों नहीं तैयार कर देती? हम अमीर थोड़े ही हैं कि हाथ पर हाथ धरे बैठकर गीत लिखते जाय? मेहनत करेंगे, तभी हमारा पेट भरता है!" लक्खीराम ने अपनी औरत को समझाया।

कला तुरंत उठ गई, दूध दुहकर मुखिये की पत्नी के हाथ सौंप दिया, दूसरे दिन उसने उपले भी तैयार किये।

उस दिन से कला ने गीत रचना छोड़ दिया, दिन भर कोई न कोई काम करते अपना वक़्त बिताने लगी। इस तरह कई दिन बीत गये। गीत लिखने का मौक़ा खोकर वह बहुत दुखी हुई।

एक दिन लक्खीराम मुखिये के बगीचे में पौधों को पानी सींचते हुए जोर से गा रहा था। वहाँ से थोड़ी दूर पर मुखिया अपने दो नौकरों के द्वारा नारियल तुड़वा रहा था, उसने लक्खीराम से कहा–"अरे, तुम्हारा मुँह पल भर के लिए भी बंद नहीं होता! तुम जब देखो, तब ये पगले गीत गाया करते हो! तुम अपना मुँह बंद करके अपना काम किया करो।"

लक्खीराम का मन कचोट उठा। आज तक सबने उसके गीत की प्रशंसा ही की है, पर किसी ने उसकी आलोचना नहीं की। वह अपना मुँह बंद करके अपना काम करने लगा, मगर अब तक उसका काम उत्साहपूर्वक जो चल रहा था, अब थोड़ा कठिन मालूम होने लगा।

इसके बाद दो-तीन दफे लक्खीराम ने काम करते हुए अप्रयत्न ही गीत गाया और मुखिये ने उसे डांट बताई। उसने गीत गाना तो बंद किया, मगर उसके कार्य करने की शक्ति बिलकुल घट गई।

मुखिये ने एक दिन लक्खीराम से पूछा–"सुनो, तुम पहले की भांति ठीक से काम नहीं करते हो। क्या तुम को नौकरी से हटा दूं?"

"आप ने तो मेरे गाने पर रोक लगाई, मैं गाये बिना ठीक से काम नहीं कर सकता। आप मुझे अपने घर भेज दीजिए, जहाँ पर गाते हुए काम करने की नौकरी मिलेगी, वहीं पर जाकर काम करूँगा।" लक्खीराम ने समझाया।

मुखिये ने मुस्कुराकर कहा–"अबे, तब तो तुम्हारी पत्नी तुम जैसी ही एक व्यक्ति है। क्या उसने काम करने से इनकार किया था? तुमने उसके गीत लिखने से क्यों रोक दिया? कला-प्रियता को इस तरह दबाकर रखोगे तो क्या वह तुम्हारी तरह दुखी न होगी? उसकी इस पीड़ा को मेरी पत्नी ने भांप लिया और तुम को सबक़ सिखाने को कहा। बस, बात और कुछ नहीं! तुम अपनी पत्नी को काम करने के साथ गीत भी लिखने दो!"
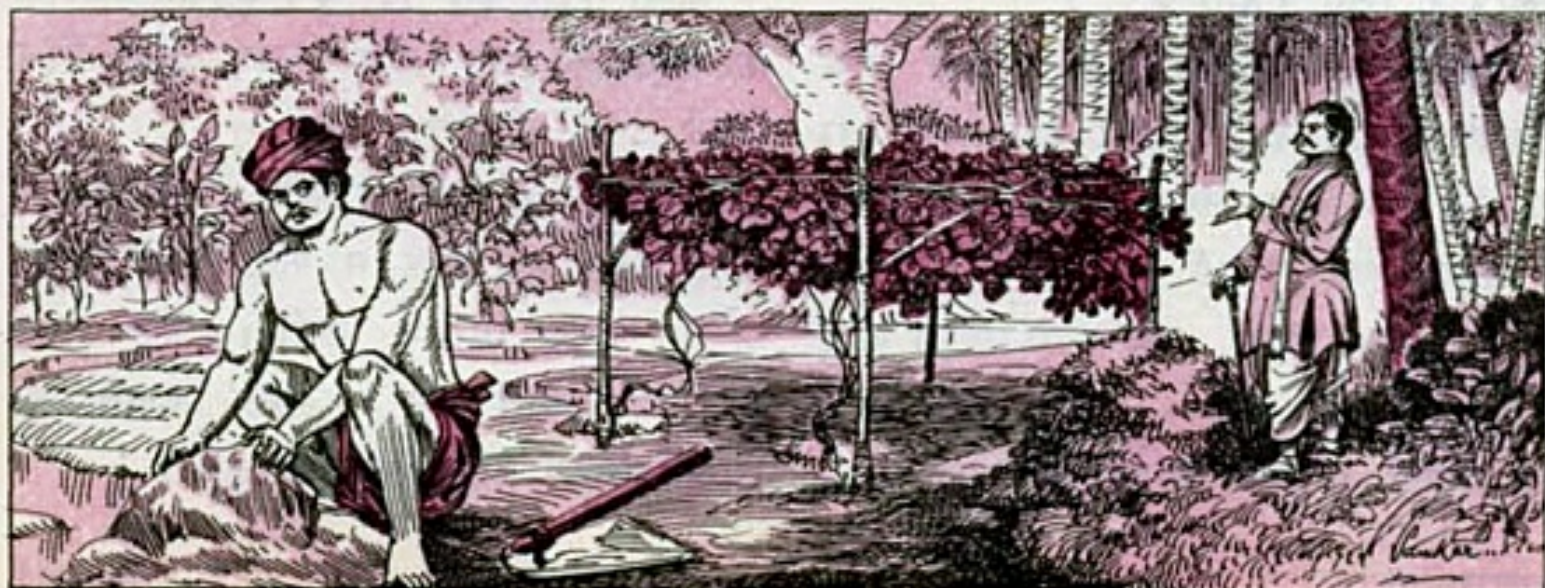
# बूढ़ी की सहायता

एक जंगल में एक बूढ़ी अपनी झोंपड़ी बना कर रहा करती थी। उस रास्ते से यात्रा करनेवाले शाम के होने पर बूढ़ी के घर में आश्रय लेते और सवेरे उठकर अपने रास्ते चले जाते!

क्योंकि उस जंगल में चोरों का दबादबा था। चोर भी जो कुछ चुराते, उसे तत्काल बूढ़ी के यहाँ छिपा रखते और उस धन को ले जाते वक़्त बूढ़ी को उसमें से थोड़ा-बहुत सौंप देते!

एक दिन शाम को एक चोर बूढ़ी के घर आ पहुँचा। उसे एक क़ीमती मोतियों का हार दिखाकर बोला—"नानीजी, इस हार को तुम अपने पास छिपा रखो, मैं जब माँगूंगा, तब देना! यह एक जमीन्दार का है। जमीन्दार का पुत्र आज रात को यहाँ पर एक घोड़े पर आ जाएगा और रात को तुम्हारी झोंपड़ी में ठहरेगा! वह अपना घोड़ा तुम्हारी झोंपड़ी के सामनेवाले पेड़ से बांध देगा। मैं रात के वक़्त आ पहुँचूंगा, यह हार तुम से लेकर आधा तुम्हें दूंगा, शेष मोतियों के साथ में उस घोड़े पर चला जाऊँगा। जमीन्दार का पुत्र सवेरे जागकर यही सोचेगा कि उसके घोड़े को कोई उड़ा ले गया है। वह तुम पर बिलकुल शक न करेगा।"

बूढ़ी ने चोर की शर्त को मान लिया और चोर के देखते उसने उस हार को छींके पर स्थित तीन मिट्टी के बर्तनों में से सब से ऊपरवाले बर्तन में डाल दिया।

इसके बाद चोर चला गया।

चोर के कहे मुताबिक़ अंधेरा फैलने के बाद जमीन्दार का पुत्र घोड़े पर आया और उस रात को वहीं ठहरने की इच्छा प्रकट की। बूढ़ी ने मान लिया। इस

रंजना द्विवेदी

पर जमीन्दार के पुत्र ने अपने घोड़े को बूढ़ी की झोंपड़ी के सामने स्थित पेड़ से बाँध दिया।

बूढ़ी को जब यह विश्वास हो गया कि जमीन्दार का पुत्र सो गया है, तब वह चोर का इंतज़ार करते खिड़की के सामने इस तरह बैठ गई जिससे उसे घोड़ा दिखाई दे।

चोर बड़ी देर तक न लौटा, सबेरा होने को था। बूढ़ी ने सोचा कि अब चोर नहीं लौटेगा, मोतियों का हार हड़प लेना चाहिए। इस कुविचार से उसने छींके पर के बर्तन में हाथ डाला। पर बर्तन में हार न था।

उसी वक़्त बूढ़ी ने अपनी पीठ के पीछे किसी के हँसने की आवाज़ सुनी। उसने चौंककर मुड़कर देखा। उसे जमीन्दार का पुत्र दिखाई दिया और उसके हाथ में मोतियों का हार झूल रहा था।

"बूढ़ी नानी! यह हार हमारे वंश में कई वर्षों से रहता आया है। ऐसे अच्छे किस्म के मोतियों का मिलना कठिन है। इनका मूल्य बहुत ही ज्यादा होगा। मैं अपनी जमीन्दारी के गाँव को छोड़ शहर में स्थाई रूप से बसने जा रहा हूँ। मैं वहीं पर कोई न कोई व्यापार करना चाहता हूँ। मैं जब इस प्रदेश में पहुँचा तब सूर्यास्त होने जा रहा था। अंधेरा फैलने पर जंगल में यात्रा करना मेरे लिए तथा हार के लिए खतरा था। इसलिए आज रात तुम्हारे यहाँ बिताकर मैंने कल सवेरे यात्रा करना चाहा। मगर मेरे सामने यह समस्या पैदा हो गई कि आज रात को मेरे यह हार और घोड़े का पहरा कौन देगा? मैंने ये दोनों काम तुम्हारे द्वारा कराना चाहा। चोर की भांति वेष धरकर आया और तुम को धोखा दिया। तुमने मेरी यह मदद की, इसके बदले में तुम यह पुरस्कार ले लो।" यों समझाकर जमीन्दार के पुत्र ने बूढ़ी को थोड़ा धन दिया और अपने घोड़े पर सवार हो चला गया।
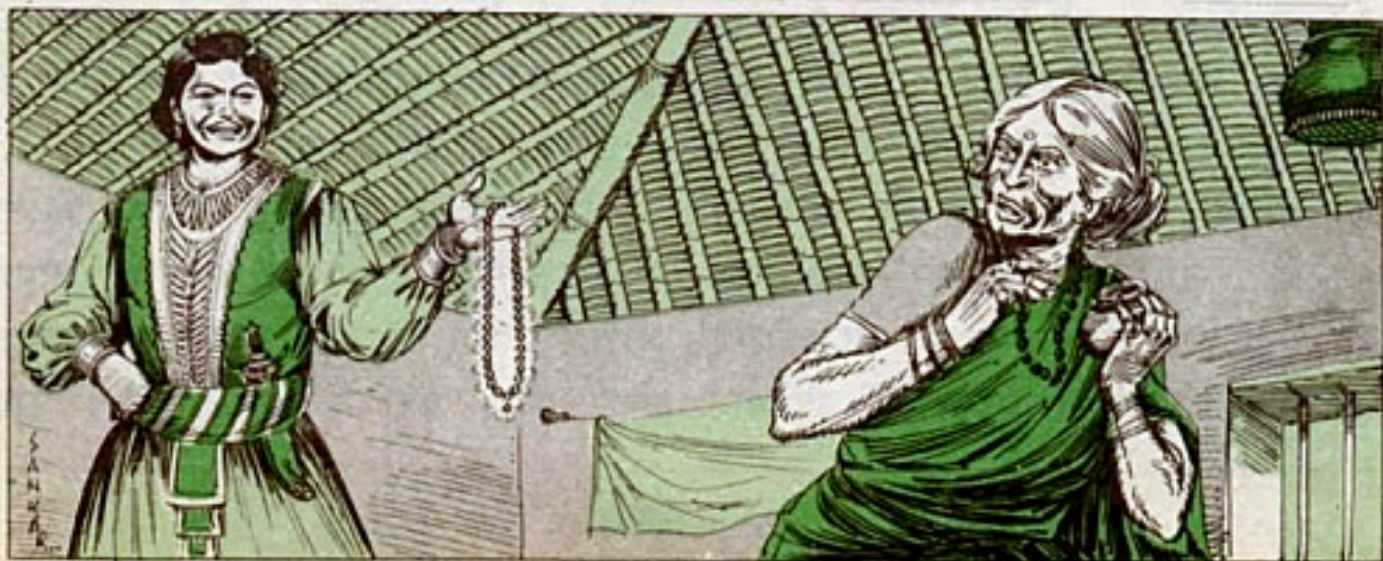
# फ़ायदे का सौदा

भानूचौधरी के यहाँ भेड़ों का रेवड़ था। वह स्वभाव से अच्छा था, साथ ही भोला था।

पड़ोसी गाँव का जगपाल एक बार बीमार पड़ा, वह इतना कमजोर हो गया कि ठीक से चल-फिर न पाता था। अपनी कमजोरी दूर करने के लिए उसने माँस खाकर शरीर को मजबूत बनाना चाहा। उसने भानूचौधरी के यहाँ पहुँचकर अपना हाल सुनाया। भानू ने जगपाल की हालत पर रहम खाकर उसे दस रुपये दिये।

जगपाल थोड़ी दूर जाकर लौट आया और बोला–"भाई साहब, ये दस रुपये तुम्हीं रख लो, मुझे भेड़ का एक छोटा बच्चा दे दो।" भानू ने दस रुपये लेकर भेड़ का बच्चा दिया।

जगपाल इस बार भी थोड़ी दूर चला गया, फिर लौटकर बोला–"भाई साहब, ये दस रुपये और भेड़ के बच्चे को तुम्हीं रख लो और बदले में मुझे बड़ी भेड़ दे दो।" भोले भानूचौधरी ने ऐसा ही किया।

इस प्रकार दो-तीन बार करके जगपाल भानूचौधरी के रेवड़ में से सबसे बढ़िया भेड़ा ले गया। बेचारे, भानूचौधरी ने सोचा कि उसने बहुत बढ़िया फ़ायदे का सौदा किया है।

# भगवान का भय

ईरान देश के एक गाँव में इब्राहीम और इस्माइल नामक दो व्यक्ति लकड़ियाँ बेचकर अपना गुजारा करते थे। वे रोज जंगल में चले जाते, लकड़ी काटकर समीप के शहर में बेच देते, जो कुछ मिलता उससे अपने परिवार चला न पाते थे। इसलिए वे अकसर सोचा करते थे कि किसी भी उपाय से सही हम भी अमीर बन जायें तो क्या ही अच्छा होता!

मगर इब्राहीम पर भगवान का भय था और वह राजभक्त भी था, इस कारण वह भगवान और राजा के लिए स्वीकार योग्य पद्धति में अमीर बनना चाहता था। इस्माइल किसी बात से डरता न था। उसका विचार था कि भगवान तथा राजा उसकी गरीबी को दूर नहीं कर सकते, इसलिए उसके अमीर बनने में उनकी ज़रूरत नहीं है।

एक दिन जंगल में वे दोनों दो दिशाओं में लकड़ी काट रहे थे। अचानक इस्माइल के मन में एक उपाय सूझ पड़ा। उसने इब्राहीम के निकट जाकर कहा—"सुनो, इब्राहीम! कहा जाता है कि जंगलों में खजाने दबे होते हैं। हमें भी इस तरह का एक खजाना हाथ लगे तो क्या ही अच्छा हो!"

"खजाना मिल जाय तो क्या फ़ायदा? खजाने तो सारी जनता की संपत्ति होते हैं, इसलिए वे तो बादशाह को ही प्राप्त होने चाहिए।" इब्राहीम ने कहा।

"तुम्हारी अक्ल ख़राब हो गई। तुम संप्रदाय के समर्थक हो!" यों खरीखोटी सुनाकर इस्माइल चला गया।

दूसरे दिन जब दोनों लकड़ी काट रहे थे, तब इब्राहीम को बड़ा भारी लक्कड़ मिला। उसने बड़ी मेहनत के साथ उसके

गंगाराम यादव

दो टुकड़े किये, तब वह आश्चर्य एवं भय से भर उठा। क्योंकि उस लक्कड़ के भीतर एक सोने का बर्तन था जिस पर सोने का ढक्कन था। ढक्कन उठाकर देखा, उसमें सोने के दीनार भरे थे।

वह तुरंत इस्माइल के पास दौड़ पड़ा। इब्राहीम को देख इस्माइल ऐसे दिखाई पड़ा, मानो वह घबरा गया है। मगर जब उसने बताया कि उसे सोना मिल गया है, तब इस्माइल ने विस्मय में आकर पूछा—"तुम इसे क्या करने जा रहे हो?"

"करूँगा क्या? इसे ले जाकर बादशाह के हाथ सौंप दूंगा। वे प्रसन्न होकर जो कुछ देंगे, उसे स्वीकार करूँगा।" इब्राहीम ने उत्तर दिया।

"अबे अभागे! तुम्हारे दिन फिरनेवाले नहीं हैं।" इस्माइल ने आह भरकर कहा।

"यदि मेरे दिन फिरने हैं तो अपने आप अच्छे दिन आ जायेंगे।" इब्राहीम ने इतमीनान से कहा।

धन के पीछे पागल रहनेवाला इस्माइल इब्राहीम को प्राप्त धन को देखने तक न आया, इस पर इब्राहीम को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोने के पात्र को एक ओर रखा। लक्कड़ को काटकर लकड़ी बनाई। सोने के बर्तन को लकड़ियों के गट्ठर के बीच छिपाकर घर पहुंचा। लकड़ियाँ

घर पर डाल सोने के पात्र को गुप्त रूप से राजधानी में ले गया। बादशाह के चरणों पर रखकर सारी कहानी सुनाई।

बादशाह ने इब्राहीम की राजभक्ति देख उसकी प्रशंसा की, उस बर्तन को स्वीकार करके इब्राहीम को पुरस्कार के रूप में बर्तन के दीनार न देकर खजाने से सौ दीनार मँगाकर दिया।

इब्राहीम ने उस धन से एक छोटा-सा व्यापार शुरू किया।

इसके दो दिन बाद इब्राहीम ने यह खबर सुनी कि इस्माइल नकली सोना को असली सोना बताकर बेचते राजधानी में बादशाह के सिपाहियों के हाथ में बन्दी

हो गया है। इब्राहीम ने इस्माइल के घर जाकर दरियाफ़त किया। उसने जो खबर सुनी थी, उसे सच्ची जानकर वह राजधानी की ओर चल पड़ा।

इस्माइल बादशाह के इन्साफ़ के इंतज़ार में सिपाहियों के साथ खड़ा था। इब्राहीम ने बादशाह के दर्शन करके निवेदन किया कि वह इस्माइल के लिए जामीन देगा, इसलिए उसे मुक्त किया जाय।

बादशाह ने इब्राहीम का निवेदन सुनकर दरबारियों से यों कहा–"जो लोग भगवान के प्रति भय रखते हैं और राजभक्ति रखते हैं तथा अपने संप्रदायों का पालन करते हैं, वे सुखपूर्वक अपनी ज़िंदगी बसर कर सकते हैं। जो इनका तिरस्कार करते हैं, वे कठिनाइयों में फँस जाते हैं। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप लोगों को एक कहानी सुनाता हूँ। दो व्यक्ति लकड़ी बेचकर अपने दिन काटते थे। उनमें एक भगवान के प्रति भय तथा राजा के प्रति भक्तिभाव रखता था। एक दिन सैर करने जाकर बादशाह ने उनकी बातचीत सुन ली और दो नकली सोने के बर्तनों को उस जगह गड़वा दिये, जहाँ पर वे लकड़ी काटते थे। नकली बर्तन दोनों को प्राप्त हुए। एक ने अपने संप्रदाय के अनुसार सोने के बर्तन को बादशाह के हाथ सौंप दिया और सौ दीनार पुरस्कार के रूप में प्राप्त किये। दूसरे ने सारा सोना खुद हड़पने के लोभ में पड़कर नकली सोने को बेचना चाहा और पकड़ा गया। उनमें पहला व्यक्ति इब्राहीम है और दूसरा इस्माइल है।

इन शब्दों के साथ बादशाह ने उन दोनों को दरबारियों को दिखाया।

इब्राहीम की जामीन पर बादशाह ने इस्माइल को छोड़ दिया। इस्माइल ने अपनी करनी पर पश्चात्ताप किया। इसके बाद इब्राहीम ने इस्माइल को अपने व्यापार में हिस्सेदार बनाया। कालांतर में वे दोनों बड़े व्यापारी बन गये।

# अच्छा सबक़

पुराने जमाने की बात है। काभोज देश में एक वर्ष बड़ी अच्छी फ़सल हुई। लेकिन खाद्य पदार्थों के दाम इस तरह चढ़ गये कि जनता में हाहाकार मच गया।

दिन प्रति दिन देश की हालत के बिगड़ते देख राजा प्रचण्ड सेन ने जनता को खज़ाने से धन दिलाया। खजाना आधा तो खाली हो गया, जिससे धन अधिक मात्रा में प्रचलन में आया और वस्तुओं के दाम और बढ़ गये।

राजा ने अकाल से जनता की रक्षा करने के लिए मंत्रियों तथा राज्य के प्रमुख अधिकारियों को बुलाकर मंत्रणा की। मगर कोई भी इस समस्या का सही समाधान दे न पाया। पुरोहितों ने सलाह दी कि होम करके देवताओं को संतुष्ट किया जाय तो अकाल से मुक्ति मिलेगी। राजा प्रचण्ड सेन ने होम करने की अनुमति देकर उसके लिए पर्याप्त धन भी दिलाया।

होम निर्विघ्न संपन्न हुए। कुछ लोगों ने मुर्गियों तथा बकरियों की बलि ग्रामदेवताओं को दी; फिर भी खाद्य पदार्थों के दाम न घटे।

अपने आखिरी प्रयत्न के रूप में राजा प्रचण्ड सेन ने राज्य के सभी अनाज के व्यापारियों को बुला भेजा और खाद्य पदार्थों के दाम घटाने का आदेश दिया। यह भी बताया कि दाम न घटायेंगे तो उन्हें दण्ड दिया जाएगा! व्यापारियों ने राजा से कहा–"महाराज, हमारे देश में पर्याप्त अनाज के न होने के कारण ही तो अकाल पड़ा है। हमने अधिक दाम देकर जो अनाज खरीदा, उसे कम दाम में कैसे बेच सकते हैं? कृपया आप ही बताइये?"

राजीव कुमार सिंह

व्यापारियों की ये बातें राजा ने नहीं मानीं; क्योंकि देश में कहीं भी फ़सल के खराब होने का समाचार उसे नहीं मिला। ऐसी हालत में खाद्य पदार्थों की कमी कैसे हो सकती है? राजा के मन में यह शंका पैदा हो गई कि व्यापारी अनाज छिपाकर इस प्रकार का नाटक रच रहे हैं! इसलिए राजा ने खाद्य पदार्थों के उचित दाम निश्चत करके उससे अधिक मूल्य पर बेचनेवाले व्यापारियों को दण्ड देने की चेतावनी दी।

फिर क्या था, सभी व्यापारियों ने अपनी दूकानें बंद की। जो बिक्री होती थी, वह गुप्त रूप से पिछवाड़े के मार्ग से होने लगी। राज्य की हालत जैसी की तैसी रह गई। राजा की चिंता और बढ़ गई।

उस हालत में मंत्री का पुत्र रविवर्मा जो देशाटन पर निकला था, लौट आया। उसने जान लिया कि उसका देश कैसी बुरी हालत में है और साथ ही उसे सुधारने के उपाय पर भी उसने विचार किया। उसे एक उपाय सूझा, उसने राजा को अपना विचार सुनाया। राजा ने उसकी योजना को अमल करने की स्वीकृति दी।

इसके बाद राजा ने घोषणा की कि अकाल को दूर करने के लिए खाद्य पदार्थ पड़ोसी देशों से मंगाये जा रहे हैं, आइंदा अकाल का नाम तक न रहेगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल गाड़ियाँ भरकर अनाज राजधानी में पहुँचने लगा। अनाज के व्यापारी घबरा गये। उन लोगों ने जो अनाज छिपा रखा था, उसका क्या होगा? लोभ में पड़ने से लाभ न होगा, यों सोचकर उन लोगों ने अनाज के दाम घटाये और कम मूल्य पर बेचने लगे।

अकाल अदृश्य हो गया। जनता को सस्ते दाम पर खाद्य पदार्थ प्राप्त होने लगे। रविवर्मा ने भूसे के जो बोरे मंगाये थे, वे राजमहल के अहाते में सुरक्षित रखे गये।
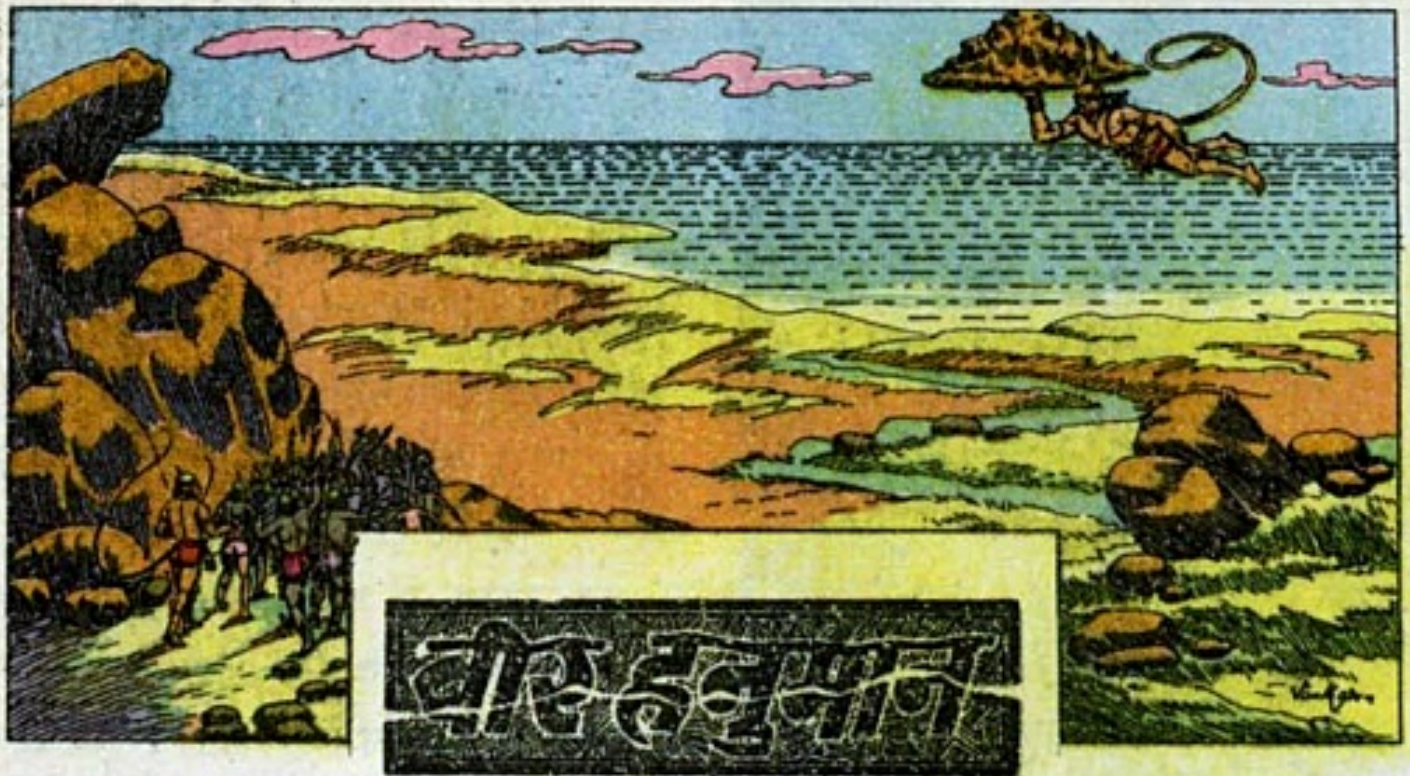
हनुमान ने औषधियों की खोज करना शुरू किया, मगर उसे उनका पता न चला। क्योंकि सभी पौधे एक ही प्रकार के थे। इस पर हनुमान खीझ उठा और पर्वत शिखर को उखाड़कर अपने हाथों पर उठाये निकल पड़ा।

भारी पहाड़ के साथ लौटनेवाले हनुमान को देख वानर अत्यंत प्रसन्न हुए और गर्जन करने लगे। उनकी खुशी में अपनी खुशी मिलाते हुए हनुमान भी गरज उठा। इसके बाद हनुमान वानरों के निकट उतर आया। वानर प्रमुखों को प्रणाम करके विभीषण के साथ आलिंगन किया।

औषधियों के स्पर्श से बहनेवाली वायु का सेवन करके रामचन्द्रजी और लक्ष्मण होश में आ गये। असंख्य वानर भी होश में आकर उठ बैठे। मरे हुए वानर भी औषधियों की गंध का सेवन करके जी उठे और उनकी शारीरिक पीड़ा जाती रही।

इसी प्रकार मृत राक्षस भी जीवित हो सकते थे, मगर युद्ध में मरे हुए सभी राक्षसों को रावण ने गुप्त रखने के ख़्याल से समुद्र में गिरवा दिया था ताकि अन्य राक्षस उनकी लाशों को देख अपनी हिम्मत हार न बैठें!

औषधियों का कार्य समाप्त होते ही हनुमान ने औषधोंवाले पर्वत को यथा स्थान पर रखा और राम तथा लक्ष्मण के निकट आ पहुँचा।

## २५. मेघनाद का होम

हनुमान के लौटते ही सुग्रीव ने प्रसन्नता पूर्वक उसे बताया–"हनुमान! कुंभकर्ण और रावण के पुत्र मर गये हैं। इस कारण रावण इस समय दुख में डूबा होगा। वह युद्ध क्षेत्र में न आएगा। इसलिए आज रात को मशाल लेकर बलवान वानरों को लंका नगर में जाना होगा।"

सूर्यास्त के बाद ज्यों ही चारों ओर अंधेरा फैल गया, त्यों ही वानर वीर मशाल हाथ में लिये लंका की ओर चल पड़े। लंका नगर के द्वारों पर पहरा देनेवाले राक्षस वानरों को देख घबराहट के मारे भाग खड़े हुए। अब वहाँ पर वानरों का सामना करनेवाला कोई न था, अतः वानरों ने नगर के द्वार, बुर्ज तथा घरों में भी आग लगाया। असंख्य घर जल उठे। घरों के साथ घरों में रहनेवाली अमूल्य वस्तुएँ भी जलकर भस्म हो गई। अनेक राक्षस भी अपने प्राणों से हाथ धो बैठे, वानरों की हर्ष ध्वनियों तथा राक्षसों के आर्तनादों से आकाश गूंज उठा।

इस हालत में राक्षस लाचार हो युद्ध के लिए तैयार हो गये, मगर इस बार उन्हें वानरों का सामना लंका नगर में ही करना पड़ा।

सुग्रीव ने वानरों को आदेश दिया–तुम लोग रावण के महल के समीप में ही राक्षसों के साथ युद्ध करो। सुग्रीव के आदेशानुसार अपने महल के सामने मशाल लिये खड़े हुए वानरों को देख रावण झल्ला उठा। उसने कुंभकर्ण के पुत्र कुंभ और निकुंभ के साथ यूपाक्ष, शोणिताक्ष, प्रजंघ तथा कंपन भी चल पड़े।

दोनों दलों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। उस युद्ध में अंगद ने सर्व प्रथम कंपन का वध किया। तदुपरांत उसने शोणिताक्ष का खड्ग हड़प लिया और उसी के द्वारा उसका सर काट डाला। तब उसका उत्साह उमड़ पड़ा और अन्य राक्षसों के साथ युद्ध करने आगे बढ़ा। उसके ही

हाथों में प्रजंघ भी प्राण खो बैठा। यूपाक्ष मेंद के हाथों में मारा गया।

इसके बाद कुंभ के साथ युद्ध करते हुए अंगद बेहोश हो गया। यह समाचार मिलते ही रामचन्द्रजी ने अंगद की सहायता के लिए जांबवान वगैरह अन्य वीरों को भेजा। मगर वे लोग कुंभ के बाणों का सामना करते हुए उसके निकट जा न पाये। इसे देख सुग्रीव आगे बढ़ा। वह कुंभ के बाणों को सहते हुए उसके निकट जा पहुँचा और उसके धनुष को तोड़ डाला। तब उसके साथ द्वन्द्व युद्ध करने लगा। आखिर सुग्रीव के हाथों में कुंभ मर गया।

अपने बड़े भाई की मृत्यु पर कुपित हो निकुंभ ने एक परिघा को हाथ में ले जोर से घुमाया और सामने बढ़नेवाले हनुमान के वक्ष पर उसका प्रहार किया। हनुमान के वक्ष से लगकर वह अस्त्र चूर चूर हो गया। पर हनुमान को गहरी चोट लग गई। इस पर क्रुद्ध हो मुट्ठी भींचकर हनुमान ने अपनी सारी शक्ति लगाकर निकुंभ की छाती पर प्रहार किया।

निकुंभ खून उगलते हुए बेहोश हुआ, लेकिन थोड़ी ही देर में होश में आकर हनुमान के साथ जूझ पड़ा। हनुमान ने उसका कंठ पकड़कर घुमाया और उसके सिर को तोड़कर फेंक दिया।

यह खबर मिलते ही रावण ने क्रोध के मारे दांत किट-किटाये और मेघनाद को युद्ध भूमि में भेजा। पर मेघनाद युद्ध भूमि में जाने के पहले होम करने के लिए यज्ञ भूमि की ओर चल पड़ा। मेघनाद के आगमन को देख वहाँ पर रहनेवाली राक्षस नारियाँ ऋत्विजों के धारण करनेवाले लाल वस्त्र ले आईं।

मेघनाद का होम अत्यंत विचित्र था। उसने दाभों के स्थान पर अपने आयुध तथा समिधा इत्यादि की जगह लोहे के पात्रों का प्रयोग किया। उसके ऋत्विज

लाल वस्त्र धारण किये हुए थे। होम के वास्ते उसने काली बकरी का वध किया। विजय की सूचना के रूप में अग्नि बिना धुएँ के धधक उठी। इस प्रकार मेघनाद ने अग्नि में होम करके पहले देव, दानव तथा राक्षसों को तर्पण दिये, तब अदृश्य होनेवाले अपने रथ पर सवार हुआ। वह रथ सूर्य की भांति अत्यंत ही प्रकाशमान था।

मेघनाद अदृश्य हो युद्ध क्षेत्र में आया। उसने वानर सेना के बीच रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण को पहचाना और उन पर बाणों की वर्षा की। इस पर रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण ने सारे आकाश में बाणों की छत बनाई तिस पर भी एक भी बाण मेघनाद को न लगा। उल्टे मेघनाद ने बाणों से रामचन्द्र के सारे अवयवों को घायल बनाया। फिर भी रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण ने अपने बाणों के द्वारा मेघनाद के असंख्य बाणों को काट डाला। उसके बाण वानरों की अपार क्षति करने लगे।

इस पर कुपित हो लक्ष्मण ने कहा– "मैं ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके समस्त राक्षसों का संहार कर डालूँगा।"

परंतु राम ने लक्ष्मण को ऐसा करने से रोकते हुए कहा–"एक मेघनाद के वास्ते पृथ्वी पर स्थित समस्त राक्षसों का वध करना उचित नहीं है। हम केवल मेघनाद का वध करने का प्रयत्न करेंगे। केवल दिव्यास्त्रों का प्रयोग करेंगे।"

इस बीच मेघनाद के दिमाग में कोई उपाय सूझा। वह युद्ध क्षेत्र से लंका नगर को लौट गया। माया सीता को रथ पर बिठाकर युद्ध भूमि को लौट आया। उसका विचार था कि रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण के देखते माया सीता का वध कर उन्हें मानसिक संताप पैदा किया जाय!

मेघनाद को युद्ध भूमि में पुनः प्रवेश करते देख हनुमान भारी शिला को उठाये उसकी ओर बढ़ा। उसके पीछे अनेक

वानर चट्टान लिये हुए आ पहुँचे। मगर मेघनाद के रथ पर कृशगात्री सीताजी रोते हुए दिखाई दीं। इस दृश्य को देखने पर हनुमान की आँखों से अश्रुधारा बह चली। उसने अन्य वानरों से पूछा– "मेघनाद अपने रथ पर सीताजी को क्यों लाया होगा?"

इसके बाद आवेश में आकर हनुमान मेघनाद की ओर बढ़ा। वानर सेना को अपनी ओर बढ़ते देख मेघनाद ने माया सीता की गर्दन पर तलवार टिका दी। उन्हें पीटकर उनके केश पकड़ लिया।

हनुमान का दुख उमड़ पड़ा। उसने मेघनाद से कहा–"दुष्ट! पापी! यह तुम क्या कर रहे हो? ऐसा करने में तुम्हें शर्म नहीं आती? यदि तुम सीताजी का वध करोगे तो शीघ्र ही तुम भी मारे जाओगे। तुम चाहे जैसे भी बलवान क्यों न हो, मेरे हाथों में पड़ गये हो। मैं तुम्हें प्राणों के साथ नहीं छोड़ूंगा।"

मेघनाद पर आक्रमण करनेवाली वानर सेना का राक्षस-सेना ने सामना किया। इस पर मेघनाद ने हनुमान से कहा– "हनुमान, इसी सीता के वास्ते तो तुम, सुग्रीव और रामचन्द्र लंका में आये हो न? मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही इस सीता का वध कर डालूंगा। इसके बाद रामचन्द्र, लक्ष्मण, सुग्रीव, द्रोही विभीषण तथा तुम्हें भी मौत के घाट उतारूंगा। तुम कहते हो कि नारियों का वध नहीं करना चाहिए, लेकिन याद रखो कि शत्रु को पीड़ा देनेवाला कोई भी कार्य किया जा सकता है।"

इन शब्दों के साथ मेघनाद ने रोनेवाली माया सीता का वध कर डाला। इसके उपरांत उसने भयंकर रूप से गर्जन किया, उस ध्वनि को सुन वानर घबराकर भाग खड़े हुए।

हनुमान ने उन्हें रोकते हुए कहा–"तुम लोगों का प्रताप और वीरता कहाँ गई? क्या वीर कहीं युद्ध भूमि से भाग जाते

लगा। इस पर राक्षसों का उत्साह उमड़ पड़ा।

हनुमान ने राक्षस सेना को मार भगाया। तब वानर वीरों से कहा–"इस राक्षस सेना का वध करने से हमें लाभ ही क्या? हम लोग सीताजी के वास्ते आये हैं। सीताजी मर गई हैं। चलो, हम सीताजी की मौत का समाचार रामचन्द्रजी तथा सुग्रीव को सुनायेंगे, इसके बाद वे लोग हमें जो आदेश देंगे, हम उसीका पालन करेंगे।"

हनुमान को युद्ध क्षेत्र से विमुख हो लौटते देख मेघनाद होम करने के लिए निकुंभिळ चैत्य की ओर बढ़ा। वहाँ पर उसने अग्नि में माँस तथा रक्त का होम किया।

इस बीच रामचन्द्रजी ने भांप लिया कि राक्षस तथा वानरों के बीच जो भयंकर युद्ध हो रहा है, उसमें हनुमान का हाथ होगा, यह बात उन्होंने जांबवान से बताई। तब रामचन्द्रजी का आदेश पाकर जांबवान हनुमान की मदद के हेतु पश्चिमी द्वार की ओर बढ़ा।

हनुमान ने देखा कि उसकी मदद के लिए भल्लूक सेना आ रही है, उसे वापस कर दी। इसके बाद सब लोग रामचन्द्रजी के पास पहुँचे। हनुमान ने दुखी स्वर में मेघनाद के द्वारा सीताजी के

हैं?" यों समझाकर हनुमान ने सबको वापस बुलवा लिया। इसके बाद उन वानर वीरों को साथ लिये राक्षसों के प्रति काल बनकर हनुमान भयंकर युद्ध करने लगा।

प्रारंभ में हनुमान ने मेघनाद के रथ पर भारी शिला फेंक दी। मेघनाद के सारथी ने युक्तिपूर्वक रथ को बचाया, मगर उस शिला के नीचे गिरकर कई राक्षस मर गये। फिर वानर रोष में आकर बुरी तरह से राक्षसों का वध करने लगे। उन लोगों ने मेघनाद पर शिलाओं की वृष्टि कर दी। मेघनाद भी क्रुद्ध हो अपने बाणों के द्वारा वानरों को मारने

वध का समाचार सुनाया । यह समाचार सुनते ही रामचन्द्रजी बेहोश से हो गये । इसे देख सभी प्रमुख वानर रामचन्द्रजी के पास दौड़े आये । उन लोगों ने रामचन्द्रजी के चेहरे पर सुगंधित जल छिड़क दिये ।

लक्ष्मण ने रामचन्द्रजी का आलिंगन करके यों कहा–"आप ने धर्म मार्ग का अवलंबन करके पिताजी के आदेश का पालन किया, राज्य को त्याग दिया, फिर भी कैकेई तथा दशरथ के प्रति कोई दुर्भावना अपने मन में न रखी । लेकिन आप ही को सभी प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ रहा है । आप का धर्म आप की रक्षा नहीं कर पा रहा है । अब ऐसा मालूम होता है कि यह धर्म व्यर्थ है । साथ ही असत्य है । अधर्म करनेवाला रावण सुखी है ।" इन शब्दों के साथ रामचन्द्रजी को वह सांत्वना देने लगा ।

उस वक़्त वहां पर विभीषण आ पहुँचा । राम और लक्ष्मण को दुखी देखा । मेघनाद के द्वारा सीताजी के वध का समाचार सुनकर बोला–"रामचन्द्रजी ! यह समाचार विश्वास करने योग्य नहीं है । सीताजी को आप के हाथ समर्पित करने के लिए इनकार करनेवाला रावण क्या सीताजी के वध की अनुमति देगा? वह सीताजी को किसी भी हालत में छोड़ने के लिए तैयार न होगा । मेघनाद होम कर रहा है । उस वक़्त वानर उसके होम में विघ्न पैदा करेंगे–यों सोचकर उन्हें दुख में भुलाने के ख्याल से उसने माया सीता का वध किया होगा । यदि वह निर्विघ्न होम पूरा करेगा तो समस्त देवता भी उसे पराजित नहीं कर सकते । इसलिए हम लोग मेघनाद का होम समाप्त होने के पूर्व ही निकुंभिळ के पास सेना लेकर पहुँच जायेंगे । परंतु आप कृपया यहीं पर निश्चिंत रह जाइए । हमारे साथ केवल लक्ष्मण को भेज दीजिए । लक्ष्मण न केवल मेघनाद के होम में विघ्न पैदा करेंगे, बल्कि उसके साथ युद्ध करके उसका वध करेंगे और ब्रह्मा के वरदान को सत्य साबित करेंगे ।"

# वीर वृषभ का पलायन

पूर्वी तट पर कुजंग नामक एक छोटा-सा राज्य था। उसकी राजधानी प्रदीप नगरी थी। उसके शासक पराक्रमी होते थे, इस कारण वे वृषभ राजा नाम से प्रसिद्ध हुए। वहाँ की प्रजा का समुद्र तथा महा नदी पर पूरा अधिकार था। राजा चन्द्रध्वज का दूसरा नाम वीर वृषभ था।

ब्रिटीश लोगों ने क्रमशः भारत पर आक्रमण करते हुए इस छोटे राज्य पर भी अधिकार करना चाहा। इस पर राजा चन्द्रध्वज के नेतृत्व में कुजंग के नाविकों ने ब्रिटीश नौकाओं को खूब तंग किया।
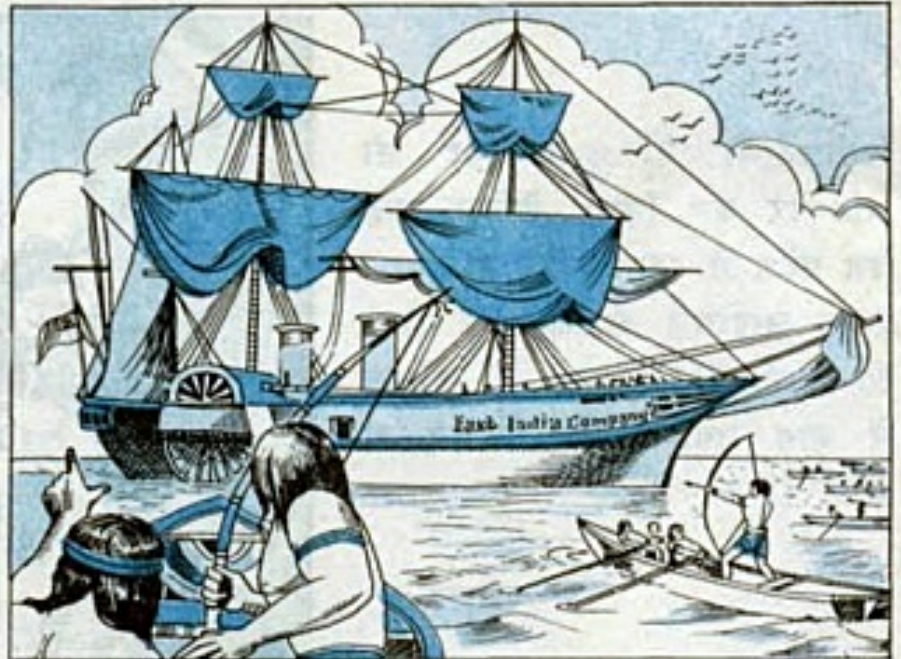
ब्रिटीश सेना ने कुजंग राज्य को घेर लिया। चन्द्रध्वज के सैनिकों के पास उत्तम प्रकार के आयुध न थे, फिर भी उन लोगों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया; लेकिन अंत में वह दुर्ग ब्रिटीश सेना के अधिकार में चला गया।

मगर राजा चन्द्रध्वज बन्दी न बना। थोड़े से अंगरक्षकों के साथ वह समुद्र के तटवर्ती घने जंगल में भाग गया।

ब्रिटीशवालों ने कुजंग पर तो अधिकार कर लिया, लेकिन उन्हें उस प्रदेश में रहना कठिन हो गया। राजा चन्द्रध्वज के अनुचर मौक़ा मिलते ही ब्रिटीशवालों के शिविरों में आग लगाकर उन पर हमला करते रहें।

ब्रिटीशवालों ने समझ लिया कि चन्द्रध्वज को बन्दी बनाने पर ही उन्हें शांति मिल सकती है। एक दिन जंगल में चन्द्रध्वज अकेले ध्यान-समाधि में था, उस वक्त ब्रिटीशवालों ने गुप्तचरों की मदद से उसे बन्दी बनाया।

बन्दी चन्द्रध्वज को कटक में लाकर महानदी के तट पर स्थित बाराबती के दुर्ग में क़ैद किया। लेकिन उसे बन्दी बनानेवाले उसके चारों तरफ़ घेरकर उसके मुँह से कहानियाँ सुनते आनंदित होने लगे।
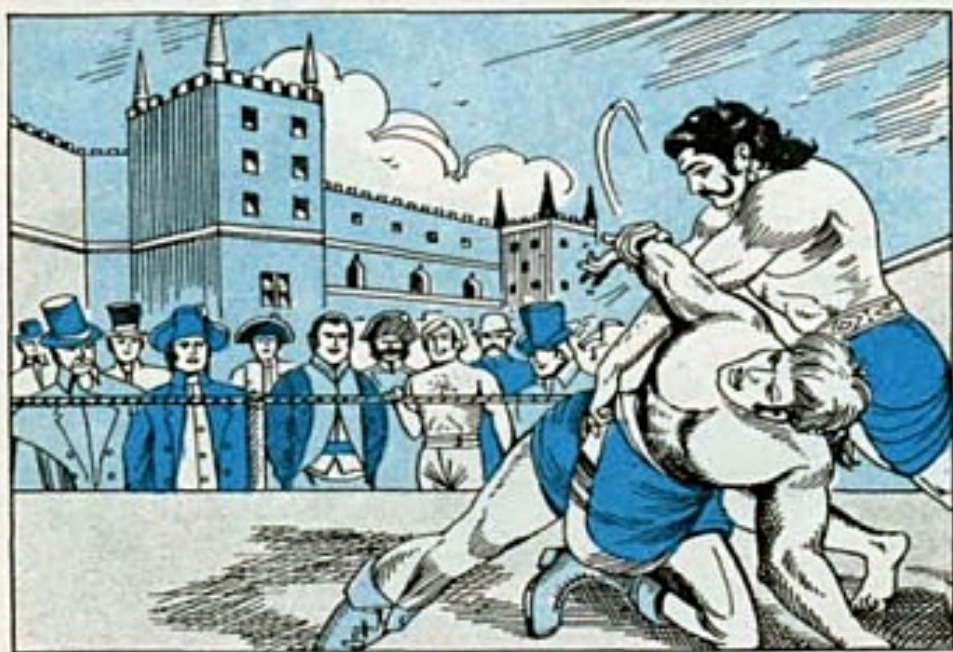
अलावा इसके चन्द्रध्वज ने ब्रिटीश अधिकारियों को अनेक भारतीय खेल सिखाये। उन खेलों में उसे असाधारण प्रतिभा प्राप्त थी। इस प्रकार कई महीने बीत गये।

एक दिन संध्या को महानदी पर एक सुंदर नौका दिखाई दी। उसमें डांड चलानेवाले कुल छत्तीस आदमी थे। उस नौका को देख गोरे साहब, उनकी पत्नियाँ और उनके बच्चे भी प्रसन्न हो उठे। ऐसी नौका को उन लोगों ने कभी न देखा था।
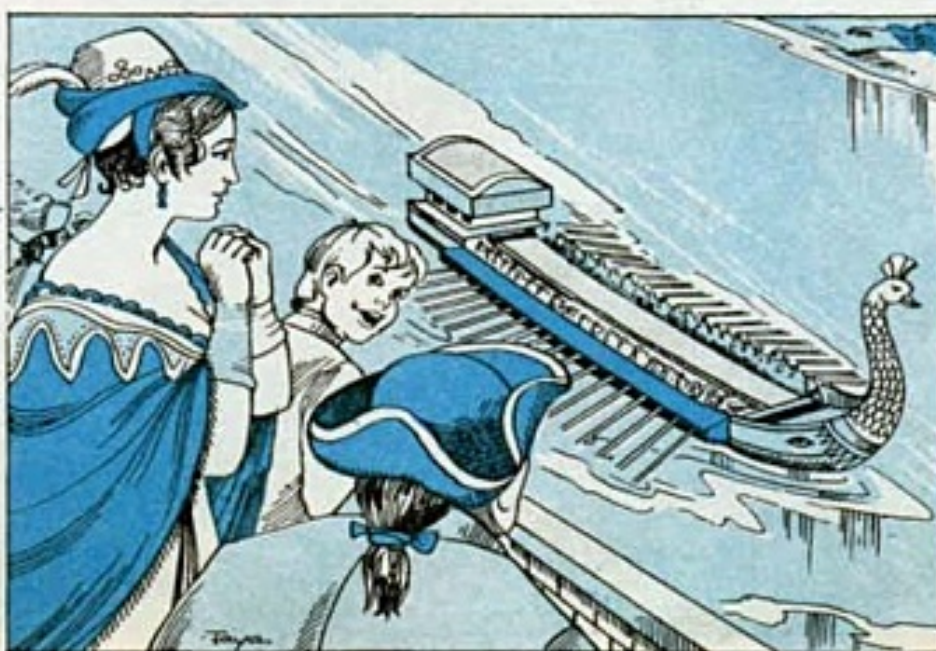
मल्लाह से पूछने पर उसने बताया कि वह नौका एक राजा की है, उसका देहांत हो गया है, इसलिए वह बिक्री के लिए तैयार है। इस पर अधिकारियों ने पूछा—"इस नौका का मूल्य क्या है?" मल्लाह ने जवाब दिया—"इसका मूल्य तो कोई राजा ही बता सकते हैं, क्योंकि ऐसी वैभवपूर्ण नौकाएँ राजा लोग ही बनवा लेते हैं।"

उत्साह में आकर गोरे साहबों ने चन्द्रध्वज को दुर्ग से बाहर बुला भेजा और उस नौका की जांच करने को कहा। इस पर चन्द्रध्वज नौका पर सवार हो गया।

फिर क्या था, एक साथ ३६ डांडें चलीं। आँखें झपकने की देरी में ही नौका नदी के मुहाने को पार कर ओझल हो गई। तभी जाकर गोरे लोगों को असली बात का पता चला। इस प्रकार राजा चन्द्रध्वज को उसकी प्रजा तथा उसके मंत्री पट्टाजोशी ने मुक्त किया।

# कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

## कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

दस व्यापारियों ने खूब धन कमाय: और एक जंगली रास्ते से घर लौटने लगे। रास्ते में तीन सशस्त्र डाकुओं ने उन्हें रोका। उनके धन को लूटा, उनके कपड़े उतरवाकर लंगोटियां पहना दीं, तब आदेश दिया—"तुम लोग नाचते हुए हमारा मनोरंजन करो।" इसके बाद वे अपने हथियार जमीन पर रखकर वे भी उनके निकट बैठ गये।

बेहथियार व्यापारियों को डाकुओं के आदेश का पालन करना पड़ा। मगर वे कुल दस आदमी थे। डाकू तीन ही थे। डाकुओं ने अपने हथियार जमीन पर रख दिये थे। इसे भांपकर एक साहसी व्यापारी ने यों गीत गाते हुए नाचना प्रारंभ किया:

"तीन तीन नौ!<br>बचा है दस!"

डाकुओं ने सोचा कि यह कोई गीत है! लेकिन बाक़ी व्यापारियों ने उस गीत का भाव समझ लिया। वे तीन दलों में बंट गये, मौक़ा देख तीन-तीन करके डाकुओं पर टूट पड़े और उन्हें बन्दी बनाया। गीत गानेवाले व्यापारी ने कपड़ों से तीनों डाकुओं के हाथ-पैर बांध दिये, तब व्यापारियों ने उन्हें घसीट ले जाकर राजा के हाथ सौंप दिया।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर, निम्न लिखित पते पर भेजें—"कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता", चन्दामामा, २ & ३, आर्काट रोड़, मद्रास-६०००२६

कार्ड हमें फ़रवरी १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँन हों। इसके परिणाम चन्दामामा के अप्रैल '७७ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

---

दिसंबर मास की प्रतियोगिता का परिणाम: "जैसे को तैसा सुहावै"

पुरस्कृत व्यक्ति: **विजय कुमार गुप्त, १३/१२२० शहीद गंज, सहरानपुर (उ. प्र.)**

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

**पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल १९७७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।**

Sharma Studio

★

B. Sreesailam

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ फ़रवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

---

## दिसंबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : यह धागे का खेल

द्वितीय फोटो : यह फूलों का मेल

प्रेषक : श्री तन्मय तैलंग ६, प्रोफेसर्स कॉलोनी, बरेली, भोपाल (म. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

**Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras 600 026 : Controlling Editor : NAGI REDDI**

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
?
3
22
5
13
8
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅडबरिज़ जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मज़ा" डिपार्टमेंट A-21
पोस्ट बॉक्स नं. ४६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
२८ फरवरी १९७७
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-69 HIN

दूध
से बना हुआ
असोका
ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट
ASOKA
GLUCOSE
IS-1011
ISI
BREEZE ABW 6 76
असोका बिस्कुट वर्कंस हैद्राबाद (आँध्र प्रदेश)

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1977 Regd. No. M. 5452

मित्र-संप्राप्ति